अजय कुमार उत्तम

मंत्र·तंत्र·यंत्र

विज्ञान

नवम्बर–८९

समस्त रोगों को समाप्त करने की क्रिया

कुण्डलिनी जागरण

शास्त्रों में विधान हैं, कि शरीर के समस्त रोगों को समाप्त करने और, पूर्ण आरोग्य लाभ प्राप्त करने की सर्वोत्तम क्रिया कुण्डलिनी जागरण है।

इसके लिए ज्योतिष शास्त्र में और च्यवन संहिता में पौष मास सर्व श्रेष्ठ बताया है, अंग्रेजी समयानुसार दिसम्बर मास में पौष प्रारम्भ होता है, अतः च्यवन संहिता के अनुसार कुण्डलिनी जागरण का यह सर्वोत्तम समय कहलाता है, और उच्चकोटि के योगी अपने शिष्यों को इसी मास में यह प्रक्रिया सम्पन्न करवाते है।

यह प्रक्रिया सरल है, और कुण्डलिनी जागरण होने से जहां पुरूष या स्त्री के ज्ञान चक्षु जाग्रत हो जाते है, शरीर की समस्त नाड़ियां चेतनायुक्त बन जाती , और मूलाधार से लगा कर सहस्रार तक कुण्डलिनी जागरण की प्रक्रिया प्रारम्भ हो जाती है फलस्वरूप वह श्रेष्ठ साधक तो बनता ही है, उसे समस्त प्रकार की साधनाओं में भी सफलता प्राप्त होती है। यही नहीं अपितु कितना ही भीषण कठिन और असाध्य रोग हो इस प्रक्रिया से वह निश्चय ही समाप्त हो जाता है।

च्यवन संहिता के अनुसार "नाभि चक्र" ले कर उसके पीछे के भाग में शुद्ध घी का हलका सा लेप लगाये और साधक प्रातः काल स्नान आदि से निवृत्त हो कर मूलाधार अर्थात् गुप्तेन्द्रिय स्थान से धीरे धीरे वह "नाभि चक्र" शरीर पर रगड़ता हुआ कण्ठ तक ले जाय, और इसी प्रकार कण्ठ से वापिस गुप्तेन्द्रिय तक ले जाय, इस प्रकार नित्य २१ बार करें, ऐसी क्रिया करते समय निम्न मंत्र का अपने होठों में ही उच्चारण करता है।

नाभि चक्र कुण्डलिनी जागरण मंत्र

॥ ॐ हुं ब्रह्म हुं ॥

यदि सुविधा हो तो साधक को १०८ बार ऐसी क्रिया करनी चाहिए, इसमें मुश्किल से आधे घंटे का समय लगता है, फिर नाभि चक्र को सुरक्षित स्थान पर रख दें और दूसरे दिन प्रातः काल भी इसी प्रकार से क्रिया करें।

कुछ ही दिनों में उसे विविध विचित्र और सुखद दृश्य एवं अनुभूतियां होने लगती है, और उसकी कुण्डलिनी जागरण प्रक्रिया प्रारम्भ हो जाती है। इसके लिए अलग अन्य किसी प्रकार का कोई विधि विधान नहीं है।

इस प्रकार का श्रेष्ठ "नाभि चक्र" कहीं से भी प्राप्त कर सकते है, अथवा आप पत्र द्वारा हमें सूचित कर दें, पत्रिका कार्यालय आपको ६०)रू. तथा डाक खर्च जोड़ कर वी.पी. से यह दुर्लभ "नाभि चक्र" सुरक्षित रूप से आपको भेज देगा। यह कई वर्षों तक आपके लिए उपयोगी रहेगा।

वर्ष–९

अंक–११

नवम्बर-१९८९

※ ※ ※ ※ ※ ※ ※ ※ ※ ※ ※ ※

मुद्रक प्रकाशक लेखक

एवं

सम्पादक

योगेन्द्र निर्मोही

सम्पर्क—

मन्त्र-तन्त्र-यन्त्र विज्ञान

डॉ० श्रीमाली मार्ग

हाईकोर्ट कोलोनी,

जोधपुर–३४२००१ (राज०)

टेलीफोन : ३२२०९

आनो भद्राः कृतयो यन्तु विश्वतः

मानव जीवन की सर्वतोन्मुखी उन्नति प्रगति और
भारतीय गूढ़ विद्याओं से समन्वित मासिक

मन्त्र–तन्त्र–यन्त्र विज्ञान

प्रार्थना

।। देवानां प्रियै सः गुरू वै महत्वं वदं च वै श्रियैः ।।

पूज्य गुरूदेव ही देवाधिदेव हैं, वे मुझे प्रिय हैं, मेरे जीवन में महत्वपूर्ण हैं, उनकी आज्ञा पालन ही मेरे लिये श्रेयस्कर है।

नाभि दर्शना
पुष्पदेहा अप्सरा सिद्धि
प्रयोग

१-१-९०

साबर मन्त्र भगवान शिव के द्वारा उत्पन्न है और भारतीय तन्त्र में साबर मन्त्रों की सर्वाधिक महत्ता है। गुरू गोरखनाथ ने तो कहा है, कि अन्य साधनाओं या पद्धतियों की अपेक्षा साबर प्रयोग निश्चित, तुरन्त और अचूक फलदायी होते है।

पुष्पदेहा अप्सरा

अभी पिछले दिनों गोरखनाथ प्रणीत एक श्रेष्ठ ग्रन्थ की हस्तलिखित प्रति देखने को मिली, जो कि उनकी शिष्य परम्परा के स्वामी आहतनाथजी से प्राप्त हुई थी, यह ग्रन्थ अत्यन्त प्राचीन पन्नों पर है परन्तु इसका एक एक अक्षर, एक एक मंत्र प्रामाणिक और अचूक है।

पुष्पदेहा अप्सरा वर्ग की श्रेष्ठतम अप्सरा है, शास्त्रों के अनुसार कुल १०८ अप्सराएं हैं, और वे सभी अपने आपमें अद्वितीय सुन्दर और आकर्षक है, परन्तु इन सभी अप्सराओं में पुष्पदेहा का सर्वाधिक सम्मान और यश है; स्वयं विश्वामित्र ने मेनका की साधना करने के उपरान्त कहा था, कि पुष्पदेहा के समान अन्य कोई अप्सरा स्वर्ग-लोक में हो ही नहीं सकती, इसके आगे के अन्य योगियों ने भी स्वीकार किया है, कि पुष्प से भी ज्यादा सुन्दर, पुष्प से भी ज्यादा कोमल और पुष्प-देहा से ज्यादा यौवनवती और सौन्दर्यवती अप्सरा है ही नहीं उसका सौन्दर्य तो इतना अद्वितीय है, कि उसके शरीर से निरन्तर मादक सुगन्ध प्रवाहित होती रहती है। पुष्पदेहा इतनी अधिक नाजुक और कोमलांगी है, कि जैसे फूली हुई कचनार की डाली हो। यौवन का वेग इतना अधिक प्रवहमान है, कि जैसे सीने में सारा समुद्र उमड़ आया हो, और सारा शरीर इतना अधिक कामोत्तेजक है, कि एक बार देखने के बाद व्यक्ति उसे जीवन भर भुला नही सकता

ऐसी नाभि दर्शना पुष्पदेहा अप्सरा की साधना विविध देवताओं ने उसे पाने के लिए सम्पन्न की, तो योगियों ने भी इस साधना को सम्पन्न किया। इसके लिए कि वे यह परख लेना चाहते थे, कि मंत्र शक्ति में भी क्षमता होती है,। साधकों ने भी इस साधना को सम्पन्न कर अनुभव किया, कि वास्तव में ही पुष्पदेहा सौन्दर्यवती अप्सरा के समान न तो स्वर्ग और न पृथ्वी लोक मे कोई अप्सरा हुई है और न हो सकेगी।

अप्सरा साधना करना कोई हलके स्तर की बात नहीं है, घर में यदि सुगन्धित पुष्प खिला हुआ हो, तो भले ही हम पुष्प को तोड़ें या नोचे खसोटे नहीं, परन्तु उसकी सुगन्ध से पूरा शरीर और घर आप्लावित रहता है, इस साधना की पांच प्रमुख विशेषताएं है।

१- यह साधना साबर साधना है, जिससे साधना में सिद्धि प्राप्त होने की संभावना सर्वाधिक है। अन्य साधनाओं में तो भूल चूक की सभावना रहती है, परन्तु इस साधना में ऐसी कोई बात नहीं होती।

२- यह साधना कम पढ़ा लिखा व्यक्ति कर सकता है, पुरूष इस साधना को सम्पन्न कर सकता है, और कोई

साधिका या स्त्री भी इस साधना को सम्पन्न कर अपने जीवन में अभिन्न सखी प्राप्त कर सकती है।

३- यह नाभि दर्शना पुष्पदेहा अप्सरा तुरन्त सिद्ध होती है, और सिद्ध होने के बाद साधक के जीवन में पूरे जीवन भर बनी रहती है। जिन योगियों ने इस साधना को सिद्ध किया है, उन्होंने स्वीकार किया है, कि अप्सरा वर्ग में यही एक मात्र साधना है, जो पहली बार मे सफलता प्रदान कर देती है।

४- साधना सिद्ध होने पर पुष्पदेहा अप्सरा प्रेमिका या प्रिया रूप में जीवन भर साधक के सामने उपस्थित रहती है, यों तो वह अदृश्य रह कर साधक को प्रत्यक्ष दिखाई देती है, दूसरे आस पास के लोग इस अदृश्य रूपा अप्सरा को नहीं देख पाते, पर साधक स्पष्ट रूप से देख सकता है और आज्ञा देने पर वह सशरीर साधक के पास उपस्थित भी रहती है, जिस प्रकार से हम अन्य मित्र को या पत्नी अथवा प्रेमिका को स्पर्श कर सकते है, छू सकते है, देख सकते है, और मनोरंजन कर सकते है, उसी प्रकार सजीव, सदेह पुष्प देहा अप्सरा के साथ भी यात्रा कर सकते है, घुम फिर सकते है, और उसके साथ मनोरंजन कर सकते है।

५- यह साधना प्रेमिका रूप में ही सिद्ध की जा सकती है, अन्य किसी रूप में यह साधना सिद्ध हो ही नहीं पाती। अतः साधना प्रारम्भ करने से पूर्व भी मन में यही चिन्तन होना चाहिए कि मैं प्राणस्वरूपा प्रेमिका के रूप में इस साधना को सिद्ध करना चाहता हूं जिससे कि उसकी मादक गन्ध जीवन भर मेरे शरीर को स्पर्श करती रहे और मुझे मनोरंजन प्रदान करती रहे।

६- इसी हस्तलिखित ग्रन्थ में बताया गया है, कि पुष्पदेहा अप्सरा सिद्ध होने के बाद साधक को बुढ़ापा व्याप्त नहीं हो पाता, यदि साधक उम्र पार कर चुका है, या बुढ़ापे की ओर अग्रसर है तो वह पुनः यौवनवान बन जाता है, और रोगरहित हो कर पूर्ण आयु प्राप्त करने में समर्थ हो पाता है।

देवराज इन्द्र ने स्वयं जब यह अनुभव किया कि कनपटी के पास के बाल सफेद होने लग गये है, चेहरे पर झुरिया सी दिखाई देने लग गई है, तब उन्होंने नाभि दर्शना पुष्पदेहा अप्सरा साधना सम्पन्न कर उसे अपने वश में किया था, फलस्वरूप इन्द्र पुनः यौवनवान और वेगवान बन सके, और अनन्तकाल तक वे सक्षम, सफल, और यौवनस्फूर्त बने रह सके।

साधना समय

यह साधना किसी भी शुक्रवार से, या किसी भी पुष्य नक्षत्र से प्रारम्भ की जा सकती है, पर इस ग्रन्थ में बताया है, कि किसी भी प्रकार का नूतन वर्ष प्रारम्भ हो रहा हो, तो वर्ष के पहले दिन साधना सम्पन्न करने पर विशेष सिद्धि और सफलता प्राप्त होने की संभावना रहती है। यह वर्ष चाहे विक्रमी सम्वत् का प्रारम्भ हो, चाहे इस्वी सन् का प्रारम्भ हो, और चाहे, अन्य किसी भी प्रकार का वर्ष प्रारम्भ हो, यह साधना सम्पन्न की जा सकती है।

सौभाग्य से इस वर्ष पौष शुक्ल चतुर्थी के दिन ईस्वी सन् १९९० का प्रारम्भ हो रहा है, अतः साधक एक जनवरी १९९० को नववर्ष के अवसर पर यह साधना प्रारम्भ कर सकते है।

साधना प्रयोग-१-१-१९९०

साधकों को चाहिए कि वे इस श्रेष्ठ साधना को सम्पन्न करने के लिए नव वर्ष के पहले दिन साधना संपन्न करे यह एक दिन की साधना है, और रात्रि को ही यह साधना प्रारम्भ की जा सकती है।

जैसा कि मैंने बताया कि इस साधना में ज्यादा पूजा पद्धति प्रयोग या झंझट नहीं है, साधक शाम को ही स्नान कर, सुन्दर उत्तम सजीले वस्त्र धारण करें, और अच्छे आसन पर उत्तर की ओर मुंह कर बैठे। सामने पुष्पदेहा अप्सरा का प्रामाणिक चित्र रख दें, और घृत का दीपक जला दें। यह आवश्यक है, कि साधक गले में गुलाब के पुष्पों का हार पहिन कर बैठे और यदि यह संभव न हो तो अन्य किसी भी प्रकार के पुष्पों का हार पहिन कर बैठ सकता है।

इसमें नाभि दर्शना पुष्पदेहा अप्सरा माला अत्यन्त आवश्यक है, क्योंकि इस माला पर ही पूर्ण प्राणश्चेतना

की हुई होती है, साधक इस प्रकार की माला को पहले से ही प्राणश्चेतना युक्त बना कर अपने पास रख लें, अथवा जहां से संभव हो प्राप्त कर ले।

उस हस्त लिखित पुस्तक में बताई हुई विधि के अनुसार इस प्रकार की माला के एक एक मनके को पुष्पदेहा अप्सरा मंत्र से सिद्ध और प्राणश्चेतना युक्त बनाया जाता है, यह सफेद रंग की दुर्लभ माला कही जाती है।

अपने सामने किसी पात्र में इस प्रकार की माला प्राप्त कर ले, पत्रिका कार्यालय में श्रेष्ठ पंडितों से बहुत ही कम मालाएं सिद्ध करवा सके है, और ये मालाएं ऊपर वर्णित स्वामी आहतनाथ जी के द्वारा ही इस प्रकार की कुछ मालाएं मंत्र सिद्ध, प्राणश्चेतना युक्त सिद्ध करवा सके है और यह उनकी कृपा है कि उन्होंने इस प्रकार की श्रेष्ठ मालाएं सिद्ध कर पत्रिका कार्यालय को प्रदान की है।

आप इस प्रकार की माला प्राप्त कर सामने पात्र में रख कर उस पर गुलाब, या हीने का इत्र लगाये उस पर पुष्प की पंखुड़ियों की वर्षा करें और फिर सफेद अप्सरा माला से मात्र २१ माला मन्त्र जाप करें। जब तक मंत्र जप चालू हो तब तक दीपक जलता रहना चाहिए और साधक की दृष्टि यथा संभव पुष्पदेहा अप्सरा के चित्र पर रहें।

पुष्पदेहा अप्सरा साबर मंत्र

ॐ आवे आवे शरमाती पुष्पदेहा प्रिया रूप रूप आवे हिलि हिलि मेरो कह्यौ करै, मनचिंतावे, कारज करे वेग सूं पावे, हर खण साथ रहे हिलि हिलि पुष्पदेहा अप्सरा फट् ॐ॥

मंत्र जप पूरा होते होते निश्चय ही जब नाभिदर्शना पुष्पदेहा अप्सरा साधक के पास आकर बैठे सामने पात्र में रखी हुई पुष्पदेहा माला को उसके गले में पहिना दें। तब वह मुस्करा कर अपने गले से माला निकाल कर पुनः साधक के गले में पहना देती है, तब साधक उसका दाहिना हाथ अपने हाथ में लेकर उससे वचन ले ले कि वह जीवन भर प्रिया रूप में साधक के साथ रहेगी और जब भी उपरोक्त मंत्र का ११ बार उच्चारण कर निमन्त्रण दिया जायेगा तो वह स देह उपस्थित हो कर साधक की प्रत्येक इच्छा को पूर्ण करेगी। ऐसा कहने पर अप्सरा उसे इस प्रकार का वचन देती है, और उस समय विदा ले लेती है, इस प्रकार से यह साधना सिद्ध होती है।

जब साधक पुष्पदेहा अप्सरा को बुलाना चाहे तब वह माला गले में पहन कर उपरोक्त मंत्र का ग्यारह बार उच्चारण करने पर वह अप्सरा निश्चय ही स देह उपस्थित होती है, और जीवन भर साधक के वश में बनी रहती है, यहीं नहीं अपितु साधक पूर्णतः रोगरहित हो कर यौवनवान बन कर पूर्ण आयु आनन्द के साथ व्यतीत करने में समर्थ, सफल हो सकता है।

पत्रिका कार्यालय ने यह निश्चय किया है, कि आप इससे सम्बन्धित कोई धनराशि न भेजें, इसी पत्रिका के अंतिम पृष्ठों पर इससे सम्बन्धित जो प्रपत्र प्रकाशित है, उसे भर कर हमें भेज दें, हम आपको १०५)रू. की वी. पी. से यह अद्वितीय माला उपहार स्वरूप भेज देंगे, आप को मात्र किसी अन्य सदस्य को इस पत्रिका का सदस्य बनाते हुए उससे मात्र १०५)रू. प्राप्त कर लेने हैं, इस प्रकार आपका का कुछ भी शुल्क नहीं लगेगा, जब वी.पी. आपके यहां आवे तब आप पोस्टमेन को १०५)रू. दे कर वी.पी. छुड़वालें, इस प्रकार यह माला सुरक्षित रूप से आपको प्राप्त हो जायेगी और आपने जिसको पत्रिका सदस्य बनाया है, उसे सन् ८९ की पूरी पत्रिकाएं प्रदान की जायेगी।

वास्तव में ही नया वर्ष आपके लिए मंगलमय हो और आप इस साधना को सिद्ध कर पूर्ण सफलता प्राप्त कर सके।

सम्पूर्ण सिद्धि प्राप्ति के लिए

नारायण हृदय

प्रयोग

आज के युग में यह आवश्यक है, कि साधक को सम्पूर्ण सिद्धि प्राप्त हो, किसी एक सिद्धि को प्राप्त करने के लिए या किसी एक साधना सिद्ध करने से ही सब कुछ नहीं हो जाता। आवश्यकता इस बात की है, कि कोई ऐसा रहस्य हो, जिसके माध्यम से सम्पूर्ण साधनाओं में तत्क्षण सिद्धि प्राप्त हो।

"भार्गव उपनिषद" में स्पष्ट रूप से बताया गया है, कि समस्त सिद्धियों को पूर्णता के साथ सिद्ध करने का एक मात्र साधन "नारायण हृदय प्रयोग" ही है, लक्ष्मी प्राप्ति का श्रेष्ठतम प्रयोग नारायण हृदय प्रयोग ही है। जीवन की पूर्ण उन्नति सुख, और सौभाग्य प्राप्त करने का एक प्रयोग 'नारायण हृदय" ही है।

महर्षि वेदव्यास ने एक स्थान पर कहा है, यदि बिना 'नारायण हृदय साधना' किये लक्ष्मी साधना की भी जाती है, तो वह व्यर्थ होती है—

नारायणस्य हृदयं सर्वाभीष्टफलप्रदम्।
लक्ष्मी हृदयकं स्तोत्रं यदि चैतद्विनाकृतम्॥
तत्सर्वं निष्फलं प्रोक्तं लक्ष्मीः क्रुध्यति सर्वतः।
एतत्संकलितं स्तोत्रं सर्वाभीष्टफलप्रदम्॥

अर्थात् यदि बिना नारायण हृदय प्रयोग किये लक्ष्मी साधना की जाती है, तो उसे अनुकूलता प्राप्त नहीं होती, उसके सारे कार्य निष्फल होते हैं, ऐसा न करने पर लक्ष्मी क्रोधित होती है, और उसे सिद्धि प्राप्त नहीं हो पाती, इसीलिए यह नारायण हृदय समस्त मनोकामनाओं को पूर्णता प्रदान करने वाला है।

गुरु गोरखनाथ ने अपने शिष्यों को लक्ष्मी सिद्धि के लिए समझाते हुए कहा था कि यदि केवल नित्य एक बार 'नारायण हृदय' का पाठ हो जाता है, या यदि कोई साधक नित्य एक बार 'नारायण हृदय' का पाठ करता है या सुनता है तो उसके घर में लक्ष्मी स्थायी रूप से निवास करती हैं।

प्रार्थनादशकं चैव मूलाष्टकमथापि वा।
यः पठेच्छृणुयान्नित्यं तस्य लक्ष्मीः स्थिरा भवेत्॥

श्रीमद्भागवत पुराण में एक स्थान पर बताया गया है—

श्रद्धा मैत्री दया शांतिः तुष्टिः पुष्टिः क्रियोन्नतिः।
बुद्धिर्मेधा तितिक्षा ह्रीः मूर्तिर्धर्मस्य पत्नयः॥

अर्थात् सृष्टि के आदिकाल में जब धर्म की उत्पत्ति हुई तो उनकी तेरह पत्नियों का वर्णन श्रीमदभागवत पुराण में आया है। इनके नाम है १- श्रद्धा, २- मैत्री, ३- दया, ४- शान्ति, ५- तुष्टि, ६- पुष्टि, ७- क्रिया ८- उन्नति, ९- बुद्धि, १०- मेधा, ११- तितिक्षा, १२- लज्जा और १३- मूर्ति।

ये धर्म की आधार भूत स्वरूपा है, जिनसे समस्त सनातन धर्म और विश्व का संचालन हो रहा है, पुराणों के अनुसार–

श्रद्धा से शुभ, मैत्री से प्रसाद, दया से अभय, शान्ति से सुख, तुष्टि से मद (प्रसन्नता), पुष्टि से स्मय (मुस्कान) क्रिया से योग, उन्नति से दर्प, बुद्धि से अर्थ, मेधा (धारणा-शक्ति से स्मृति (स्मरण रखने की शक्ति) तितिक्षा से क्षेम ह्री से प्रश्रय और मूर्ति से नर-नारायण।

शास्त्रों के अनुसार मूर्ति का तात्पर्य सम्पूर्ण संसार का कल्याण है, मूर्ति का तात्पर्य जीवन की पूर्णता है, मूर्ति का तात्पर्य धर्म अर्थ, काम और मोक्ष है, मूर्ति का तात्पर्य सम्पूर्ण सिद्धि है। इसी मूर्ति से नर-नारायण का जन्म हुआ, फलस्वरूप "नारायण हृदय" का पाठ करने से सम्पूर्ण सिद्धियां, सफलता, और श्रेष्ठता प्राप्त हो पाती है।

अठारह पुराणों के रचयिता महर्षिवेद व्यास ने कहा है, मूर्ति के कई नाम है, और कलियुग में यदि मूर्ति अर्थात् सिद्धि से प्रादुर्भाव नारायण हृदय का पाठ नहीं करते, समझ लो, वे संसार में कुछ भी सफलता अर्जित नही कर पाते—

प्राप्ते कलावहह दुष्टतरे च काले।
न त्वां भजन्ति मनुजा ननु वंचितास्ते॥

अर्थात् कलियुग के आ जाने से लोगों का खराब समय प्रारम्भ होगा, उस समय भी यदि वे 'नारायण हृदय' का पाठ नहीं करते हैं, तो समझ लेना चाहिए कि वे प्राणी अवश्य ही इस संसार में ठगे जाते हैं।

भगवत्पाद शंकराचार्य ने इसका विवेचन करते हुए अपने शिष्यों को समझाया है, कि जहां हाथों से शुभ कार्य नहीं होता वहां "नारायण हृदय" का पाठ करने से शुभता का भाव उत्पन्न हो जाता है। इसके माध्यम से लोगों के प्रति मैत्री भावना दया और मन में पूर्ण शान्ति अनुभव होती है, "नारायण हृदय" का नित्य एक पाठ करने से घर में सम्पूर्ण सिद्धियां और सफलता अनुभव होती है। केवल यही एक ऐसा प्रयोग है, जिसके द्वारा बुद्धि की प्रखरता आती है, फलस्वरूप मानव जीवन की निरन्तर उन्नति होती रहती है, जहां मेरी बुद्धि काम नहीं करती वहां यह हृदय मेरी बुद्धि बन कर मेरी इच्छा पूरी करता है, जहां मेरा बल बेकार हो जाता है, वहां यह नारायण हृदय "विजया" बन कर विजय श्री मेरे गले में पहनाती है, यह "नारायण हृदय" कहीं पर लक्ष्मी के रूप में, कहीं सरस्वती तो कहीं चण्डी के रूप में सहयोगी बनता है। इसके माध्यम से साधक धर्म, अर्थ, काम, और मोक्ष चारों को अनायास प्राप्त कर लेता है।

इस स्तोत्र की शक्तिमत्ता सिद्ध करते हुए देवी भागवत में बताया गया है।

कीर्तिर्मतिः स्तुति-गती करूणा दया त्वम्।
श्रद्धा धृतिश्च वसुधा कमला जया च॥

पुष्टिः कलाऽथ विजया गिरिजा जया त्वम्।
तुष्टिः प्रभा त्वमसि बुद्धिरूपा रमा च॥

अर्थात् यही (नारायण हृदय) कीर्ति है, सुबुद्धि है, करूणा और दया है, लक्ष्मी और विजय है, पुष्टि और तुष्टि है, तथा जीवन में पूर्ण सिद्धि और सफलता है।

नारायण हृदय प्रयोग

इसका प्रयोग दो प्रकार से हो सकता है, एक तो साधक नित्य इसका पाठ करे, और १०८ दिन तक पाठ करे, तो पूर्ण सफलता प्राप्त होती है, दूसरा किसी भी

गुरूवार को प्रातः स्नान कर शुद्ध श्वेत वस्त्र धारण कर इस नारायण हृदय स्तोत्र के १०८ पाठ कर फिर किसी ब्राह्मण को या कन्या को भोजन करावे तो यह साधना सिद्ध होती है ।

तीसरे किसी भी गुरूवार को इस 'नारायण हृदय' का निरन्तर उच्चारण करते हुए १००८ घृत की आहुतियां यज्ञ में दे, तो उसके सारे मनोरथ पूर्ण होते है, और जीवन मे तत्क्षण सफलता प्राप्त होती है ।

साधक अपने पूजा स्थान में भगवान "नारायण" का सुन्दर चित्र स्थापित कर दे, और षोडसोपचार पूजन करके फिर उसके सामने यह साधना प्रारम्भ करें । इस साधना के लिए यों तो किसी भी गुरुवार को प्रयोग किया जा सकता है । साधक चाहें तो सोलह, गुरूवार को अर्थात् प्रत्येक गुरूवार को इस 'नारायण हृदय' के १०८ पाठ करे, फिर अगले गुरुवार को पुनः पाठ करे, इस प्रकार सोलह गुरूवार तक ऐसा करने से 'नारायण हृदय' पुरश्चरण सम्पन्न होता है, और उसकी समस्त इच्छाओं की पूर्ति तत्क्षण और निश्चित हो जाती है ।

यदि विशेष सिद्धि या किसी विशेष कार्य को तत्क्षण ही सम्पन्न करना हो, तो साधक शुक्रवार की रात को दीपक जला कर हाथ में संकल्प ले कर कहे कि मैं अमुक कार्य की तत्क्षण सफलता के लिए यह प्रयोग सम्पन्न कर रहा हूं और उसी रात्रि को इस 'नारायण हृदय' के १०८ पाठ सम्पन्न कर ले, तो तुरन्त ही उसे सबंधित काम के अनुकूल फल प्राप्त हो जाते है ।

आगे के पृष्ठों में मैं कर न्यास, ध्यान, आदि देता हुआ "नारायण हृदय" को स्पष्ट कर रहा हूं ।

॥ नारायण हृदयम् ॥

श्री गणेशाय नमः ।

ॐ अस्य श्रीनारायणहृदयस्तोत्रमन्त्रस्य भार्गव ऋषिः, अनुष्टुप छन्दः, श्री लक्ष्मीनारायणो देवता; श्रीलक्ष्मीनारायणप्रीत्यर्थे जपे विनियोगः ।

अथ करन्यासः

ॐ नारायणः परं ज्योतिरित्यंगुष्ठाभ्यां नमः ।
ॐ नारायणः परं ब्रह्मेति तर्जनीभ्यां नमः ।
ॐ नारायणः परो देवेति मध्यमाभ्यां नमः ।
ॐ नारायणः परं धामेति अनामिकाभ्यां नमः ।
ॐ नारायणः परो धर्म इति कनिष्ठिकाभ्यां नमः ।
ॐ विश्व नारायणः परं इति करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ।

अथ ध्यानम्

उद्यदादित्यसङ्काशं पीतवाससमच्युतम् ।
शङ्खचक्रगदापाणिं ध्यायेल्लक्ष्मीपतिं हरिम् ॥

ॐ नमो भगवते नारायणाय इति मंत्रं जपेत् ।

श्री वेदव्यास उवाच

श्री मन्नारायणो ज्योतिरात्मा नारायणः परः ।
नारायणः परं ब्रह्म नारायण नमोऽस्तु ते ॥१॥
नारायण परो देवो दाता नारायणः परः ।
नारायणः परो ध्याता नारायण नमोऽस्तु ते ॥२॥
नारायणः परं धाम ध्याता नारायणः परः ।
नारायणः परोधर्मो नारायण नमोऽस्तु ते ॥३॥
नारायणपरो धर्मो विद्या नारायणः परा ।
विश्वं नारायणः साक्षान्नारायण नमोऽस्तु ते ॥४॥

नारायणाद्विधिर्जातो जातो नारायणाच्छिवः ।
जातो नारायणादिन्द्रो नारायण नमोऽस्तु ते ॥५॥

रविर्नारायणं तेजश्चन्द्रो नारायणं महः ।
वह्निर्नारायणः साक्षान्नारायण नमोऽस्तु ते ॥६॥

नारायण उपास्यः स्याद्गुरुर्नारायणः परः ।
नारायणः परो बोधो नारायण नमोऽस्तु ते ॥७॥

नारायणः फलं मुख्यं सिद्धिर्नारायणः सुखम् ।
सर्वं नारायणः शुद्धो नारायण नमोऽस्तु ते ॥८॥

नारायणस्त्वमेवासि नारायण हृदि स्थितः ।
प्रेरकः प्रेयमाणानां त्वया प्रेरितमानसः ॥९॥

त्वदाज्ञां शिरसा धृत्वा जपामि जनपावनम् ।
नानोपासनमार्गाणां भावकृद्भावबोधकः ॥१०॥

भावकृद्भावभूतस्त्वं मम सौख्यप्रदो भव ।
त्वन्मायामोहितं विश्वं त्वयैव परिकल्पितम् ॥११॥

त्वदधिष्ठानमात्रेण सैव सर्वार्थकारिणी ।
त्वमेवैतां पुरस्कृत्य मम कामान् समर्पय ॥१२॥

न मे त्वदन्यः सन्त्राता त्वदन्यं न हि दैवतम् ।
त्वदन्यं न हि जानामि पालकं पुण्यरूपकम् ॥१३॥

तावत्सांसारिको भावो नमस्ते भावनात्मने ।
तत्सिद्धिदो भवेत्सद्यः सर्वथा सर्वदा विभो ॥१४॥

पापिनामहमेकाग्र दयालूनां त्वमग्रणीः ।
दयनीयो मदन्योऽस्ति तव कोऽत्र जगत्त्रये ॥१५॥

त्वयाऽप्यहं न सृष्टश्चेन्न स्यात्तव दयालुता ।
आमयो वा न सृष्टश्चेदोषधस्य वृथोदयः ॥१६॥

पापसंघपरिक्रान्तः पापात्मा पापरूपधृक् ।
त्वदन्यः कोऽत्र पापेभ्यस्त्राता मे जगतीतले ॥१७॥

त्वमेव माता च पिता त्वमेव त्वमेव बन्धुश्च सखा त्वमेव ।
त्वमेव विद्या च गुरुस्त्वमेव त्वमेव सर्वं मम देवदेव ॥१८॥

प्रार्थनादशकं चैव मूलाष्टकमथापि वा ।
यः पठेच्छृणुयान्नित्यं तस्य लक्ष्मीः स्थिरा भवेत् ॥१९॥

नारायणस्य हृदयं सर्वाभीष्टफलप्रदम् ।
लक्ष्मीहृदयकं स्तोत्रं यदि चैतद्विनाकृतम् ॥२०॥

तत्सर्वं निष्फलं प्रोक्तं लक्ष्मीः क्रुध्यति सर्वतः ।
एतत्सङ्कलितं स्तोत्रं सर्वाभीष्टफलप्रदम् ॥२१॥

लक्ष्मीहृदयकं स्तोत्रं तथा नारायणात्मकम् ।
जपेद्यः सङ्कलीकृत्य सर्वाभीष्टमवाप्नुयात् ॥२२॥

नारायणस्य हृदयमादौ जप्त्वा ततः परम् ।
लक्ष्मीहृदयकं स्तोत्रं जपेन्नारायणं पुनः ॥२३॥

पुनर्नारायणं जप्त्वा पुनर्लक्ष्मीहृदं जपेत् ।
पुनर्नारायणहृदं सम्पुटीकरणं जपेत् ।
एवं मध्ये द्विवारेण जपेल्लक्ष्मीहृदं हि तत् ॥२४॥

लक्ष्मीहृदयकं स्तोत्रं सर्वमेतत्प्रकाशितम् ।
तद्वज्जापादिकं कुर्यादेतत्सङ्कलितं शुभम् ॥२५॥

स सर्वकाममाप्नोति आधिव्याधिभयं हरेत् ।
गोप्यमेतत्सदा कुर्यान्न सर्वत्र प्रकाशयेत् ॥२६॥

इति गुह्यतमं शास्त्रमुक्तं ब्रह्मादिकैः पुरा ।
तस्मात्सर्वप्रयत्नेन गोपयेत्साधयेत्सुधीः ॥२७॥

यत्रैतत्पुस्तकं तिष्ठेल्लक्ष्मीनारायणात्मकम् ।
भूतप्रेतपिशाचांश्च बेतालान्नाशयेत्सदा ॥२८॥

लक्ष्मीहृदयप्रोक्तेन विधिना साधयेत्सुधीः ।
भृगुवारे च रात्रौ तु पूजयेत्साधयेत्सुधीः ॥२९॥

गोपनात्साधनाल्लोके धन्यो भवति तत्त्ववित् ।
नारायणहृदं नित्यं नारायण नमोऽस्तु ते ॥३०॥

॥ इत्यथर्वणरहस्योत्तरभागे नारायणहृदयं सम्पूर्णम् ॥

तांत्रोक्त

बला-अति बला

श्री सिद्धेश्वरी प्रयोग

१-१२-८९

तांत्रिक ग्रन्थों में दस महाविद्याओं को अत्यधिक महत्व दिया है परन्तु उच्चकोटि के तांत्रिको ने बला अति-बला सिद्धेश्वरी पटल को दस महाविद्याओं की आधारभूता शक्ति माना है इसीलिए सिद्धेश्वरी साधना पटल को पिछले हजारो वर्षों से प्रमुखता दी गई है।

समस्त सिद्धियों की आधारभूता सिद्धेश्वरी पटल भगवान गोरखनाथ की प्राणस्वरूपा आराध्या रही है, यह प्रयोग अभी तक सर्वथा गोपनीय रहा है महायोगी गोरखनाथ की आराध्या बला अति बला सिद्धेश्वरी ही थी।

यह दुर्लभ प्रयोग सिद्धाश्रम के उच्चतम योगीराज अच्युतानन्द जी से प्राप्त हुआ हैं जो महायोगी गोरख नाथ के ही प्राणस्वरूप माने जाते हैं।

इस सिद्धेश्वरी दिवस पर यह दुर्लभ प्रयोग देते हुए, हम अत्यन्त गौरव से योगीराज के प्रति पूर्ण श्रद्धा व्यक्त करते है, कि उनके द्वारा पहली बार भारतवर्ष के साधकों को यह दुर्लभ प्रयोग प्राप्त हो रहा है।

सिद्धेश्वरी पटल, सिद्धेश्वरी साधना आदि का प्रचलन और प्रयोग तो भारतवर्ष के कई प्रान्तों में देखने को मिला है, विशेष कर बिहार उड़ीसा, बंगाल आदि में सिद्धेश्वरी को कुल देवी के रूप में मान्यता मिली हुई है

और वे इसकी साधना भी सम्पन्न करते है, परन्तु बला-अतिबला सिद्धेश्वरी प्रयोग सर्वथा नूतन दुर्लभ और गोपनीय प्रयोग है ।

ऐसा कहा जाता है, कि सिद्धेश्वरी दस महाविद्याओं की आधारभूता शक्ति रही है । सिद्धेश्वरी की ज्योति से ही दस महाविद्याओं की आधारभूता शक्ति बनी है । सिद्धेश्वरी की ज्योति से ही दस महाविद्याओं की उत्पत्ति और प्रादुर्भाव हुआ ।

इसीलिए तांत्रिक ग्रन्थों में सिद्धेश्वरी साधना को सर्वाधिक प्रमुखता दी गई और यहां तक कहा गया कि कोई भी साधक तब तक सिद्ध नहीं कहला सकता, जब तक वह सिद्धेश्वरी सिद्ध न कर ले ।

यों तो बला अति बला सिद्धेश्वरी साधना किसी भी शुक्ल पक्ष की अष्टमी से प्रारम्भ की जा सकती है, सिद्धेश्वरी दिवस के अवसर पर तो छोटे से छोटा और मामूली से मामूली साधक भी इस साधना को सम्पन्न करने की इच्छा रखता है, इसलिए प्रत्येक साधक को इस दिन यह साधना अवश्य ही सिद्ध करनी चाहिए ।

शास्त्रों के अनुसार मार्ग शीर्ष शुक्ल ३ को सिद्धेश्वरी साधना दिवस माना गया है । अंग्रेजी तिथि के अनुसार इस वर्ष १-१२-८९ को सिद्धेश्वरी साधना दिवस है ।

साधक प्रातः काल उठ कर कुए के जल से स्नान करे, यदि यह संभव न हो तो, जल में थोड़ा सा गंगाजल मिला कर उससे स्नान करे, यदि पास में नदी या तालाब हो तो उसके तट पर जा कर स्नान कर भगवान सूर्य को सात बार जल से अर्ध्य दे, या अपने घर पर ही सूर्य को अर्ध्य दे कर सात प्रदक्षिणा कर भगवान सूर्य से याचना करे, कि वह साधक को पूर्ण तेजस्विता प्रदान करे, जिससे कि वह सिद्धेश्वरी साधना सम्पन्न कर सके ।

इसके बाद साधक अपने साधना कक्ष को अपने हाथ से धोए, स्वच्छ करे, और फिर सफेद ऊनी आसन के ऊपर एक मीटर लम्बा और आधा मीटर चौड़ा सफेद रेशमी वस्त्र बिछावे और बिछे हुए रेशमी वस्त्र के चारों कोनों पर कुंकुम से पंच कोण बनावे, साधक चाहे तो त्रिकोण भी बना सकता है । फिर आसन के मध्य में त्रिकोण बनाकर उसके बीच में बिन्दी लगावे और फिर पूर्व की ओर मुंह कर साधक सफेद धोती धारण कर प्रसन्न चित्त बैठ जाय, इसके बाद अपने सिर की चोटी के दो भाग करते हुए, बांये भाग में गांठ लगावे और दाहिने भाग को खुला छोड़ दें ।

इसके बाद अपने सामने तांबे का पात्र चावल की ढेरी पर स्थापित करे, और अपने आसन के बांई ओर कुंकुम से एक ही पंक्ति में पांच त्रिकोण बनावे और इस पर एक एक चावल की ढेरी बनावे और निम्न उच्चारण करे -

१– ॐ प्रीतिव्यै नमः २- ॐ आधारशक्तये नमः, ३– ॐ अनन्ताय नमः ४- ॐ कूर्माय नमः, ५- ॐ शेषनागाय नमः, इस प्रकार करने के बाद इन पांचों की कुंकुम, अक्षत और और पुष्प से पूजन करे और फिर अपने सामने एक चावल की ढेरी बना कर उस पर तांबे का पात्र स्थापित करे, और हाथ में जल लेकर संकल्प ले ।

मैं अमुक गोत्र, अमुक पिता का पुत्र, अमुक नाम का साधक आज अमुक तिथि अमुक वार को बला अति बला सिद्धेश्वरी साधना सम्पन्न कर रहा हूं ।

फिर अपने दाहिनी ओर एक चावल की ढेरी पर तांबे का कलश स्थापित करे उसमें गंगाजल डाले और उसके मुंह पर पीपल, बड़ या किसी भी वृक्ष के पांच या ग्यारह पत्ते रख कर उस पर नारियल रखे । नारियल के ऊपर लाल कपड़ा लपेट ले और मौली से बांध ले ।

फिर कलश के सामने ही एक लकडे के बाजोट पर सफेद कपड़ा बिछा कर नौ चावल की ढेरियां बनावे

प्रत्येक पर सुपारी रखें और फिर नौ ग्रहों की स्थापना करे- १- ॐ सूर्याय नमः, २- ॐ चन्द्रमायै नमः ३- ॐ भौमाय नमः, ४- ॐ बुधाय नमः, ५- ॐ गुरुवयै नमः ६- ॐ शुक्रायै नमः, ७- ॐ शनैश्चरायै नमः ८- ॐ राहवै नमः, ९- ॐ केतवै नमः। इस प्रकार उच्चारण कर नौ ग्रहों की संक्षिप्त पूजा करे तथा सामने शुद्ध घृत का दीपक प्रज्जवलित करे, अगरबत्तीं लगावे और नैवेद्य चढ़ावे,

इसके बाद अपने सामने एक लकड़ी के बाजोट पर सफेद रेशमी वस्त्र बिछावे, और उस रेशमी वस्त्र के मध्य में रक्त चन्दन से (यह बाजार में आसानी से मिल जाता है) अथवा कुंकुम से निम्न कोण बनावे।

१- बिन्दु, २- त्रिकोण, ३- षटकोण, ४- वृत्त, ५- अष्टदल, ६- पंचकोण (यदि साधकों को इसमें कुछ अड़चन आती हो, तो पत्रिका कार्यालय को पत्र लिख कर पूछ सकते है, उन्हें कागज पर ये ६ प्रकार के यंत्र बना कर भेज दिये जायेगे अथवा सिद्धेश्वरी यंत्र के साथ इन कोणों को कागज पर अंकित कर भेजने की व्यवस्था की जा रही है, यों ये कोण बनाना सरल है)

फिर सामने बिछे हुए रेशमी वस्त्र के बांई ओर ऊपर से नीचे की ओर कुंकुम की आठ रेखाएं खीचें, इसी प्रकार कपडे के दाहिनी ओर भी कुंकुम की आठ रेखाएं खीचे, इन्हें षोडश मातृकाएं कहा गया है, फिर प्रत्येक रेखा का सक्षिप्त पूजन करे (यहां संक्षिप्त पूजन से तात्पर्य कुंकुम समर्पित करना, अक्षत चढ़ाना, पुष्प समर्पित करना और नैवेद्य प्रदान करना होता है)

फिर मध्य में जो छः यन्त्र कुंकुम से बनाये थे, उसके ऊपर भव्य ताम्र पत्र पर निर्मित "सिद्धेश्वरी यंत्र" को स्थापित करे, यह यंत्र अत्यधिक महत्वपूर्ण, दुर्लभ और महत्वपूर्ण होता है। इसका निर्माण गोरखनाथ प्रणीत बला अति बला पद्धति से ही सम्पन्न होना चाहिए, तभी यह यंत्र तेजस्वी बनता है, और तभी इस साधना में सिद्धि प्राप्त होती है, वास्तव में ही इस यंत्र की रचना प्रक्रिया और निर्माण विधि अत्यन्त जटिल होती है, सौभाग्यशाली साधकों के घर में ही यह 'दुर्लभ सिद्धेश्वरी यंत्र' स्थापित हो पाता है, जिसका लाभ वह स्वयं तो उठाता ही है, आने वाली पीढ़ियां भी उस दुर्लभ यंत्र से लाभ उठाती है।

फिर इस यंत्र की पूजा करे, अलग पात्र में यंत्र को रख कर गंगाजल से स्नान करावे, और फिर दूध, दही, घी, शहद, और शक्कर से अलग अलग स्नान करावे, फिर इन पांचों चीजों को मिलाकर पंचामृत से स्नान करावे, फिर शुद्ध जल से यंत्र को धोकर अन्त में गंगाजल से यंत्र को स्नान कराते हुए उसे पवित्र करे, और स्वच्छ वस्त्र से पोंछ दें, और पुनः इस यन्त्र को साधक के सामने ही कपडे पर बने हुए यंत्र के ऊपर रखे हुए पात्र में स्थापित कर दें।

इसके बाद इस यंत्र पर रक्त चन्दन से या केसर से सोलह बिन्दियां लगावे, और लाल पुष्पों की माला पहनावे। यदि यह संभव न हो तो यन्त्र के सामने लाल पुष्प समर्पित करे। फिर सामने दूध का बना हुआ प्रसाद समर्पित करे, लौंग इलायची रखे और यन्त्र के सामने शुद्ध घृत का दीपक लगा कर निम्न सिद्धेश्वरी ध्यान उच्चारण करें।

उद्यन्मार्तण्ड-कान्ति-विगलित-कवरीं कृष्ण- वस्त्रावृतांगाम्,
दण्डं लिंगं कराब्जैर्वरमथ भुवनं सन्दधतीं त्रिनेत्राम्।
नाना-रत्नैर्विभातां स्मित-मुख-कमलां सेवितां देव-सर्वैर्माया-राज्ञीं नमो भूत स रवि-कल-तनुमाश्रये ईश्वरी त्वाम ।।

ध्यान के बाद अपने दोनों हाथों में पुष्प और अक्षत ले कर अपने सिर पर रखे, अपने ललाट पर केसर का तिलक करे और अपने सीने के मध्य में हृदय पटल पर केसर का तिलक करे, पुष्प समर्पित करे।

इसके बाद दाहिनी और शंख पात्र या शंख स्थापित करे, और बांई और घण्टा स्थापित करे, फिर इन दोनों की पूजा करे।

इसके बाद अपने दोनों हाथों में पुष्प ले कर मध्य में स्थापित सिद्धेश्वरी यंत्र का निम्न मन्त्र से आह्वान करे।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं कान्हेश्वरी सर्व जन मनोहारिणी सर्व-मुख-स्तम्भिनी, सव-स्त्री-पुरुषाकर्षिणी शंखेना-त्रोटय त्रोटय सव-शत्रूणां भजय–भंजय द्वेषि दल दलय निर्दलय निर्दलय सर्व-शत्रूणां स्तम्भय स्तम्भय मोहनास्त्रेण द्वेषि उच्चाटय सर्व-वशं कुरू कुरू स्वाहा। देवि सर्व-सिद्धेश्वरि कामिनी-गणेश्वरि इहागच्छ इह तिष्ठ ममोपकल्पितां पूजां गृहाण मम सपरिवार रक्ष रक्ष नमः।

ऐसा कह कर हाथों में लिये हुए पुष्प भगवती सिद्धेश्वरी के यन्त्र के सामने समर्पित कर दे।

अंग पूजा

अपने बांये हाथ में पुष्प और अक्षत ले कर यन्त्र के ऊपर चढ़ाते हुए, निम्न प्रकार से उच्चारण करे जिससे कि इस यन्त्र में इन प्रसिद्ध देवियों की स्थापना प्राण प्रतिष्ठा हो सके।

ॐ कालिकायै नमः। ॐ सिद्धेश्वर्यै, नमः ॐ तारायै नमः, ॐ भगवत्यै नमः ॐ बगला-मुख्यै नमः, ॐ कुंजिकायै नमः, ॐ शीतलायै नमः ॐ त्रिपुण्यै नमः ॐ मात्रिकायै नमः, ॐ लक्ष्म्यै नमः, ॐ दिगीशायै नमः।

विश्व दैव्यै स्थापन प्राण प्रतिष्ठा

फिर हाथ में पुष्प ले कर एक एक नाम का उच्चारण करते हुए एक एक पुष्प यंत्र पर समर्पित करे।

१- ॐ ऐं ह्लीं श्रो ह्लिलि ह्लिलि वन्दी दैव्यै नमः, २- ॐ गीर्वे नमः ३- सम्मोहिन्यै नमः, ४- ॐ मोहिन्यै नमः ५- ॐ विमोहिन्यै नमः, ६- ॐ वस्वादि -- षडगेभ्यो नमः, ७ ॐ ब्रह्मणेभ्यो नमः ८- ॐ विष्णवेभ्यो नमः, ९- ॐ शिवायै नमः, १०- ॐ उर्वश्यै नमः ११- ॐ घोषायै नमः, १२- ॐ सहजन्यै नमः, १३- ॐ सुकेशिन्यै नमः १४- ॐ तिलोत्तमायै नमः १५- ॐ गुप्तव्यै नमः, १६- सुप्तव्यै नमः १७- ॐ सिद्ध कन्याभ्यो नमः १८- किन्नरीभ्यो नमः, १९- ॐ नाग कन्याभ्यो नमः, २०- ॐ ॐ विद्या-धरीभ्यो नमः, २१- किंपुरूषेभ्यो नमः, २२- ॐ यक्षिणी भ्यो नमः २३- ॐ पिशाचीभ्यो नमः, २४- ॐ ब्रह्माण्यै नमः, २५- ॐ वैष्णव्यै नमः, २६- ॐ इष्ट शान्तयै नमः, २७- ॐ गुणायै नमः, २८- ॐ क्रिया-शान्त्यै नमः २९- ॐ ज्ञान-शक्तये नमः, ३०- ॐ रजोगुणायै नमः

फिर इसके बाद यन्त्र पर एक एक रक्त पुष्प या लाल रंग के पुष्प चढ़ाते हुए षोडश शक्तियों की स्थापना करे।

षोडश शक्ति स्थापना-प्राण प्रतिष्ठा

१- ॐ हुं कार्येभ्यो नमः, २- ॐ खेचरीभ्यो नमः ३- ॐ चण्डाख्यायै नमः, ४- ॐ अक्षोहिण्यै नमः, ५- ॐ हूं कार्ये नमः, ६- ॐ क्षे कार्यै नमः, ७- ॐ पंच-भैरवाभ्यो नमः, ८- ॐ सिद्धेश्वर्यै नमः, ९- ॐ तारायै नमः, १०- ॐ भगवत्यै नमः, ११- ॐ बगलामुख्यै नमः, १२- ॐ कुंजिकायै नमः १३- ॐ शीतलायै नमः १४- ॐ त्रिपुण्यै नमः १५- ॐ मातृत्रिकायै नमः १६- ॐ लक्ष्म्यै नमः,।

इसके बाद चावलों को पीले रंग में रंग कर निम्न

लक्ष्मी मातृकाओं की स्थापना थोड़े थोड़े चावल चढ़ाते हुए करे—

लक्ष्मी मातृका स्थापना-प्राण प्रतिष्ठा

१- ॐ ऐं ह्रीं हिलि हिलि वन्दी-दैव्यै नमः, २- ॐ संमोहिन्यै नमः, ३- ॐ मोहिन्यै नमः, ४- ॐ विमोहिन्यै नमः, ५- ॐ वस्त्रादि-षडंगेभ्यो नमः, ६- ॐ ब्रह्माणभ्यो नमः, ७- ॐ विष्णवीभ्यो नमः, ८- ॐ शिवायै नमः ९- ॐ उर्वश्यै नमः, १०- ॐ मेनकायै नमः, ११- ॐ रम्भायै नमः १२- ॐ घृताच्यै नमः, १३- ॐ मंजुघोषायै नमः, १४- ॐ सहजन्यै नमः १५- ॐ सुकेशिन्यै नमः १६- ॐ महा भैरवीभ्यो नमः १७– ॐ इन्द्राण्यै नमः १८- ॐ असितांगाय नमः १९– ॐ संहारिण्यै नमः, २०- ॐ छिन्नमस्तिकायै नमः ।

ऐसा करने के बाद यन्त्र के चारों ओर शुद्ध घृत के सोलह दीपक लगा ले और सामने दूध का बना हुआ प्रसाद समर्पित कर दे। इसके बाद निम्न सिद्धेश्वरी कवच का सोलह बार पाठ करे। ऐसा करने पर यह एक दिन की साधना सिद्ध हो जाती है।

यह कवच अत्यन्त महत्वपूर्ण और दुर्लभ है, साधक चाहे तो अपनी नित्य पूजा में भी इस स्तोत्र मंत्र पाठ का प्रयोग कर सकते है। तांत्रिक साधकों ने इस स्तोत्र को मंत्र स्वरूप ही माना है, जिस प्रकार से दुर्गा सप्तसती का प्रत्येक श्लोक मंत्र माना गया है, इसी प्रकार सिद्धेश्वरी कवच का निम्न स्तोत्र के प्रत्येक अक्षर को मंत्र माना है।

स्वामी जी से प्राप्त मैं इस स्तोत्र को आगे के पृष्ठों में स्पष्ट कर रहा हूं, पहले हाथ में जल लेकर विनियोग करे, अर्थात् हाथ में जल लेकर छोड़ दे और फिर सोलह बार इस स्तोत्र का पाठ करे।

विनियोग

ॐ अस्य श्री सिद्धेश्वरी-कवचस्य वशिष्ठ ऋषिः श्री सिद्धेश्वरी देवता, सकल कार्यार्थ-सिद्धये पाठे विनियोग।

सिद्धेश्वरी कवच

संसार-तारिणी सिद्धा पूर्वस्यां पातु मां सदा,
ब्रह्माणी पातु चाग्नेयां दक्षिणे दक्षिण प्रिया ।।१

नेऋत्यां चण्ड-मुण्डा च पातु मां सर्वतः सदा,
त्रि-रूपा सा मता देवी प्रतीच्यां पातु मां सदा ।।२

वायव्यां त्रिपुरा पातु ह्युत्तरे रूद्र – नायिका,
ईशाने पदम - नेत्रा च द्वै पातु त्रिलिंगका ।।३

दक्ष - पार्श्वे महा-माया वाम - पार्श्वे हर–प्रिया,
मस्तकं पातु में देवी सदा सिद्धा मनोहरा ।।४

भालं में पातु रूद्राणी नेत्रे भुवन - सुन्दरी,
सर्वतः पातु में वक्त्रं सदा त्रिपुर सुन्दरी ।।५

श्मशाने भैरवी पातु स्कन्धौ में सर्वतः स्वयम्,
उग्र पार्श्वों महा - बाह्मा हस्तौ रक्षतु चाम्बिका ६।।

हृदयं पातु वज्रांगी निम्न – नाभिर्नभस्तले,
अग्रतः परमेशानी परमानन्द विग्रहा ।।७

पृष्ठतः कुमुदा पातु सर्वतः सर्वदा वतात्,
गोपनीयं सदा देवी न कस्मैचित् प्रकाशयेत् ।।८

यः कश्चित् शृणुयादेयत् श्रवणं भैरवोदितं,
संग्रामे स जयेत शत्रुं मातंगमिव केसरी ।।९

न शस्त्राणि न च अस्त्राणि तद्-देहे प्रविशन्ति वै,
श्मशाने प्रान्तरे दुर्गे घोरे निगड़ - बन्धने ।।१०

नौकायां गिरि-दुर्गे च संकटे प्राण संशये,
मन्त्र तन्त्र भये प्राप्ते विष वन्हि-भयेषु च ।।११

दुर्गांति सन्तरेद् घोरां प्रयाति कमला-पदं,
वन्ध्या वा काक-वन्ध्या वा मृत वत्सा च यांगना ।।१२

श्रुत्वा स्तोत्रं लभेत् पुत्रं स-धनं चिर-जीवनं,
गुरौ मन्त्रे तथा देवे वन्दने यस्य चोत्तमा ।।१३
धोर्यस्य सयतामेति तस्य सिद्धिर्न संशयः ।।१४

इस प्रकार कवच स्तोत्र का पाठ करने के बाद आरती करे और "फिर स्तोत्र" का पाठ करे—

अपराध - सहस्राणि क्रियन्ते हर्निशं मया,
दासौ यमिति मां मत्वा क्षमस्व परमेश्वरि ।।१

आवाहनं न जानामि न जानामि विसर्जनं,
पूजां चैव न जानामि क्षमस्व परमेश्वरि ।।२

मन्त्र - हीनं क्रिया - हीनं भक्ति हीनं सुरेश्वरि,
यत्पूजितं मया देवि परिपूर्ण तदस्तु में ।।३

अज्ञानाद्विस्मृते भ्रान्त्या यन्न्यूनमधिकं कृतम्,
तत्सर्वं क्षम्यतां देवि प्रसीद परमेश्वरि ।।४

सिद्धेश्वरि जगन्मातः सच्चिदानन्द विग्रह,
गृहाणार्चामिमां प्रीत्या प्रसीद परमेश्वरि ।।५

गुह्याति-गुह्य गोप्त्री त्वं गृहाणास्मत्कृतं जपं,
सिद्धिर्भवतु मे देवि त्वत्प्रसादात्सुरेश्वरि ।।६

मेरे अनुभूत दुर्लभ प्रयोग

११-१२-८६

सिद्धाश्रम पंचांग के अनुसार मार्ग शीर्ष शुक्ल १४ को भूत पिशाच सिद्धि दिवस माना गया है। पृथ्वी लोक के अलावा सात इतर योनियों के लोक माने गये है, जिनके नाम है, १- देवता, २- पितर, ३- अप्सरा वर्ग, ४- भूत प्रेत पिशाच, ५- गन्धर्व, ६- यक्ष, ७- किन्नर,।

इनका तात्पर्य यह है, कि ये सभी मनुष्य के अलावा इतर योनियां कही जाती है, जिन्हे सिद्ध कर मानव उनसे सहायता ले सकता है, और अपने जीवन को अनुकूल बना सकता है। यदि वह देवताओं की साधना कर उनसे आशीर्वाद प्राप्त करने का आकांक्षी है, तो भूत प्रेत साधना सम्पन्न कर उनको भी पूर्णतः अनुकूल बना कर जीवन को सुविधा सम्पन्न बनाया जा सकता है।

इसी दृष्टि से सिद्धाश्रम ने इस दिवस को इस विशेष योनि "भूत-प्रेत-पिशाच" को सिद्ध करने और अपने अनुकूल बनाने के लिए इस दिवस का महत्व दिया है।

यदि सत्य बात कही जाय तो मनुष्य, मनुष्य को धोखा दे सकता है, मनुष्य मनुष्य को विश्वासघात कर सकता है, मनुष्य मनुष्य की हत्या कर सकता है, या उसे पीड़ा पहुँचा सकता है, या उसके लिए परेशानियां पैदा कर सकता है।

पर मनुष्य के अलावा इतर योनियां न तो विश्वास-घात करती है, न धोखा देती है, न उनके लिए किसी प्रकार की परेशानियां पैदा करती है, वे तो उलटे मनुष्य के लिए सहायक और उपयोगी है।

जिस प्रकार से हम अपने घर के दरवाजे पर गेटमेन या चौकीदार रखते समय इस बात का ध्यान रखते है, कि वह लम्बा चौड़ा कद्दावर और बलिष्ठ हो, उसका

चेहरा रौबिला और प्रभाव वाला हो, जिससे कि बाहरी व्यक्ति खौफ खाय और नुकसान पहुँचाने की चेष्टा न करे, ठीक इसी प्रकार से भूत प्रेत भी बलिष्ठ कद्दावर और रौबीले होते है, जिस प्रकार हमारा चौकीदार या अंग रक्षक हमें हानि नहीं पहुँचा सकता, उलटे बाहरी विपरीत तत्वों से रक्षा करता है; उसी प्रकार से ये भूत प्रेत पिशाच आदि भी चौबीसों घण्टे हमारी रक्षा करने को तत्पर रहते है और बाहरी दुश्मनों से हमें सुरक्षा प्रदान करते है।

और यह धारणा तो बिलकुल गलत है, कि भूत प्रेत डरावने होते है, या भयानक होते है, अथवा उनके सिर पर सींग और लम्बे लम्बे दांत होते है, ये सारी बातें मनगढंत हैं, हमारी यह प्रवृति रही है, कि हम अपने शत्रु का विवरण इसी प्रकार के शब्दों से करते है। हकीकत में देखा जाय तो भूत प्रेत भी हमारी तरह सीधे सादे सरल है, यह अलग बात है, कि हम मनुष्य योनी में है, और वे भूत प्रेत योनी में। यह अलग बात है, कि हम एक दूसरे को देख पाते है, और वे हमें दिखाई नहीं देते, पर वास्तविकता तो यह है, कि वे अदृश्य रह कर हमें ज्यादा सुरक्षा, ज्यादा सहायता, और ज्यादा अनुकूलता प्रदान कर सकते है, मनुष्य तो विश्वासघाती और धोखा देने वाला हो सकता है, परन्तु भूत प्रेत जिसके नियंत्रण में होते है, न वे तो उसे धोखा देते है, न विश्वास घात और न किसी प्रकार का छल करते है।

इस तंत्र दिवस या दूसरे शब्दों में भूत प्रेत पिशाच दिवस के अवसर पर मैं तीन प्रयोग स्पष्ट कर रहा हूँ, जो सर्वथा प्रामाणिक है और अनुभूत है। मेरे पिताजी की मृत्यु बहुत पहले हो गई थी, और मैं पन्द्रह सोलह साल का था, तभी घर से निकल पड़ा था, मेरा जीवन का अधिकांश भाग औघड़ साधुओं के बीच बीता है, मेरे गुरू हबुआ स्वामी अपने समय के विख्यात औघड़ रहे है, भारतवर्ष में जिन साधकों ने औघड़ साधनाएं की हैं, या जो औघड़ साधना के बारे में रूचि रखते है, उनको हबुआ स्वामी के बारे में जरूर ज्ञान होगा, उनका शिष्य बनना गौरव की बात मानी जाती थी, मैं उनके सम्पर्क साहचर्य में कई वर्ष रहा, और कई औघड़ साधनाएं सीखी जो कि हमेशा सत्य सिद्ध हुई।

पत्रिका के अनुरोध पर मैं मेरे जीवन के गम्य तीन महत्वपूर्ण साधनाएं पत्रिका साधकों को स्पष्ट कर रहा हूं, और वे बिना भय और बिना किसी हिचकिचाहट के इन साधनाओं को सम्पन्न करे, तब उन्हें पता चलेगा कि ये साधनाएं कितनी महत्वपूर्ण और जीवन के लिए आवश्यक है।

ये साधनाएं अपने घर में सम्पन्न की जा सकती हैं, श्मशान में जाने की या श्मशान की राख बिछाने की कोई जरूरत नहीं है, गृहस्थ व्यक्ति भी इस प्रकार की साधनाएं अपने घर में सम्पन्न कर सकता है, गायत्री उपासक या शिव अथवा विष्णु उपासक भी इस प्रकार की साधनाओं को सम्पन्न कर सकता है। इस साधना में किसी प्रकार का कोई दोष नहीं है, यदि किसी वजह से साधना असफल भी हो जाय तब भी इसका कोई विपरीत प्रभाव देखने को नहीं मिलता।

अगर सिद्धाश्रम जैसे उच्च कोटि के आश्रम ने भूत प्रेत पिशाच दिवस के महत्व को समझा है, तो जो पाठक इसमें रुचि रखते है, वे इन साधनाओं को अवश्य ही सम्पन्न करे और हाथों हाथ इसका लाभ अनुभव करें।

यहां पर मैं यह बात स्पष्ट कर दूं कि मार्ग शीर्ष शुक्ल १४ तो इस कार्य के लिए नियुक्त है ही, जो कि इस वर्ष ११-१२-८९ को स्पष्ट हो रही है, पर यों भी किसी भी शुक्रवार को पूरे वर्ष में कभी भी इन साधनाओं को सम्पन्न की जा सकती है।

हिडिम्बा साधना

हिडिम्बा को हमने राक्षसी माना है, और यह महाभारत काल के भीम की पत्नी थी, पर पूरे हिमाचल

प्रदेश में हिडिम्बा को कुल देवी माना जाता है, वहां इसकी पूजा होती है, प्रत्येक हिमाचल प्रदेश में व्यक्ति हिडिम्बा की पूजा और साधना उसी प्रकार से करता है, जिस प्रकार से हम जगदम्बा, शिव या विष्णु की करते है। अगर वह राक्षसी ही होती तो हिमाचल प्रदेश के लोग उसे कुल देवी कैसे मानते ? मैं पहले भी स्पष्ट कर चुका हूं कि यह तो हमारे सोचने का अन्तर है, राक्षसी भी हमारी तरह से सौम्य सरल सात्विक देवी होती है।

हिडिम्बा साधना जीवन की महत्वपूर्ण साधना है, इस साधना को सम्पन्न करने पर निश्चय ही पांच लाभ होते है।

१- इससे घर में सुरक्षा रहती है, और घर पर या दुकान पर कोई तांत्रिक प्रयोग हो तो वह दूर हो जाता है।

२- यदि किसी प्रकार की भूत प्रेत बाधा हो तो हिडिम्बा मंत्र सिद्ध होने पर वह इस समस्या का समाधान कर सकता है।

३- हिडिम्बा सिद्ध होने पर वह साधक की निरन्तर रक्षा करती है, और विविध उपद्रवों से बचाती है।

४- हिडिम्बा सिद्ध होने पर साधक को निरन्तर धन, द्रव्य, आभूषण आदि अनायास प्राप्त होते रहते है।

५- हिडिम्बा सिद्ध होने पर वह साधक की प्रत्येक मनोकामना पूरी करती है।

साधना प्रयोग

रात्रि को साधक काली धोती पहिन कर दक्षिण दिशा की ओर मुंह कर काले आसन पर बैठ जाय, सामने एक स्टील की थाली ले कर उसके मध्य में त्रिकोण बनावे और त्रिकोण के बीच में एक छोटी सी सिन्दूर की बिन्दी लगावे। इसके बाद त्रिकोण के तीनों कोनों पर एक एक बिल्ली की नाल रख दें। इसका तात्पर्य यह है कि इस साधना में तीन बिल्ली की नाल का प्रयोग होता है, फिर मध्य में जो सिन्दूर की बिन्दी लगाई है, उस पर "सिद्धि फल" रखे और इस त्रिकोण को हिडिम्बा मान कर उसकी सामान्य पूजा करें। सामने तेल का दीपक लगावे, और हकीक की नीली माला से मंत्र जप करे। मंत्र जप करते समय कमरे में दूसरा कोई नहीं होना चाहिए इसमें इस रात्रि को केवल २१ माला मन्त्र जप करें।

हिडिम्बा सिद्ध मंत्र

ॐ ई चिल क्रीं क्रीं फ्लूं फ्लूं हिडिम्बायै हिलि हिलि फट् ।।

जब मन्त्र जप पूरा हो जाय तब वह माला उस यंत्र पर ही रख दे, और रात्रि को ही वह माला तथा तीनों बिल्ली की नाल घर के बाहर रास्ते पर रख दें पानी का लोटा साथ में ले जावे और उसके चारों ओर पानी से घेरा बना दें, और वह खाली लोटा लेकर घर पर आ जाय।

घर आने के बाद स्नान करके साधक सो जाय, ऐसा करने पर हिडिम्बा सिद्ध होती है, जब कभी उपरोक्त हिडिम्बा मन्त्र का ११ बार उच्चारण किया जाता है, तो हिडिम्बा अदृश्य रूप में ही सही, पर साधक की आंखों के सामने प्रत्यक्ष दिखाई देती है और उसे जो भी कार्य कहा जाता है, वह कार्य सम्पन्न करती है।

इसके अलावा भी यदि उसे कोई भी कार्य नही सौंपा जाता तो भी वे ऊपर बताये हुए रक्षा आदि कार्यों को तो साधक के लिए करती ही रहती है।

यह साधना भूत प्रेत पिशाच दिवस अथवा किसी भी शुक्रवार को सम्पन्न की जा सकती है।

२- भूत सिद्धि

यह मेरा अनुभूत प्रयोग है, और मैंने अपने जीवन में इससे बहुत लाभ उठाया है, मैं ऊपर भी बता चुका हूं कि भूत प्रेत भी हमारी तरह ही सामान्य सरल सात्विक व्यक्ति होते है और हमें बराबर सहयोग प्रदान करते रहते है। भूत साधना के निम्न पांच लाभ तो तुरन्त प्राप्त होने लग जाते है।

१- भूत सिद्ध होने पर वह हर क्षण साधक के साथ रहेगा और जब साधक उसे आवाज दे कर मंत्र पढ़ेगा तो उसकी आंखों के सामने स्पष्ट होगा। साधक तो उसे देख सकेगा परन्तु यदि पास में कोई दूसरे व्यक्ति बैठे हुए है, तो उन्हें वह भूत दिखाई नहीं देगा।

२- साधक अपने जीवन में भूत को जो भी कार्य सौंपता है, वह आज्ञाकारी सेवक की तरह तुरन्त पूरा करता है, कभी कभी तो वह कठिन और असाध्य कार्य भी साधक के लिए कर बैठता है।

३- भूत सिद्ध होने पर वह घर में नौकर की तरह बना रहता है, और साधक की आज्ञा पर वह घर के छोटे बडे कार्य भी करने को तैयार रहता है।

४- साधक की आज्ञा होने पर वह अदृश्य रूप में रह कर साधक के शत्रुओं से लड़ाई लड़ लेता है और उन्हें बहुत अधिक हानि पहुंचा देता है, ऐसे साधक के दुश्मन हर क्षण भय से थरथराते रहते है।

५- भूत वस में होने पर साधक उससे जो भी द्रव्य, धन, या पदार्थ मंगाना चाहता है, वह लाकर प्रदान करता है, और कभी भी कार्य में शिथिलता नहीं बरतता।

साधना प्रयोग

देखा जाय तो अन्य देवी देवताओं की अपेक्षा यह साधना सरल है और साधक आसानी से इस साधना को सम्पन्न कर सकता है, हिडिम्बा साधना या भूत साधना कोई भी पुरूष या स्त्री सम्पन्न कर सकता है। इस साधना को भी इस दिवस पर अथवा किसी भी शुक्रवार की रात्रि को सम्पन्न किया जा सकता है।

साधक स्नान कर तहमद की तरह की एक धोती कमर के नीचे बांध ले, जिस प्रकार से मुसलमान तहमद बांधते है, उसी प्रकार से धोती को बांधे अर्थात पीछे लांग न लगावे, और फिर जिस प्रकार मुसलमान नमाज पढते समय बैठते है, उसी प्रकार से साधक दक्षिण दिशा की ओर मुंह कर बैठ जाय, सामने एक स्टील की थाली ले और पूरी थाली काजल से रंग दें। फिर किसी तिनके की सहायता से उस थाली में पुरुष की आकृति बनावे, और उस आकृति के सिर पर सियार सिंगी तथा दोनो पैरो पर भी एक एक सियार सिंगी रखे, इस प्रकार इस प्रयोग में तीन सियार सिंगी का प्रयोग होता है। उस आकृति के मध्य में या सीने पर एक शूकर दन्त रख दें फिर इसके सामने तीन तेल के दीपक लगावें, और उसी प्रकार बैठे बैठे रुद्राक्ष माला से मंत्र जप करे।

भूत सिद्धि मंत्र

॥ ॐ भ्रं भ्रूं भूतनाथाय फट् ॥

इस रात्रि को २१ माला मंत्र जप करने का विधान है, जब मंत्र जप पूरा हो जाय तो सामने पुरुष की आकृति दिखाई देगी जो सामान्य मनुष्य की तरह होगी, उससे भयभीत होने की आवश्यकता नही है। साधक मंत्र जप पूरा होने पर उससे प्रश्न पूछे कि तुम्हारा नाम क्या है, तब वह अपना नाम बतायेगा।

फिर साधक उसके ऊपर जल छिड़कता हुआ कहे कि तू मेरे वश में रहेगा और मैं अपने जीवन में तुम्हारा नाम लेकर मंत्र पढ़कर आवाज दूं तब तुम आवोगे और मेरा कार्य करोगे।

ऐसा होने के बाद जब भूत अदृश्य हो जाय तब थाली में रखी हुई, तीनो सियारसिंगी तथा शूकरदन्त एक लाल पोटली में बांध दे और उसे अपने घर में रख दे, या

जमीन में गाड़ दे। घर में रखने पर भी किसी प्रकार का कोई दोष नहीं है।

इसके बाद जब भी उस भूत को उसका नाम बोल कर ११ बार उपरोक्त मंत्र का उच्चारण करेगे तो वह भूत अदृश्य रूप में साधक के सामने होगा। साधक उसे देख सकेगा, पर पास में बैठे हुए अन्य लोग उसे नहीं देख सकेगे।

तब साधक मन ही मन अथवा धीरे से जो भी आज्ञा देगा, वह भूत अवश्य ही उस कार्य को सम्पन्न करेगा।

यह मेरा अनुभूत प्रयोग है, और मैंने जितनी बार भी आजमाया है, मुझे इसमें पूरी सफलता मिली है।

३- पिशाच सिद्धि

यह भी भूत की तरह ही एक योनी होती है, पर अत्यन्त बलिष्ठ, अत्यन्त मजबूत और दृढ़ निश्चय युक्त। यदि साधक इसे सिद्ध करले, और इसे आज्ञा दे दे तो सामने चाहें, पचास शत्रु बन्दूक या पिस्तोल लाठी या भालें लिए हुए खड़े हो तो उसे पांच मिनट में ही मटियामेंट कर देता है।

यह पिशाच साधक के साथ चौबीसों घण्टे अदृश्य रूप में रहता है और साधक की प्रत्येक आज्ञा का पालन करता है। बहुत दूर से कोई पदार्थ मंगवा लेना किसी के घर से कोई सामान निकाल कर लाना, साधक को एक स्थान से दूसरे स्थान पर पहुँचा देना, किसी अन्य व्यक्ति को सैकड़ों मील दूर से उठा कर ले आना, आदि कार्य पिशाच के द्वारा सहज संभव है।

इसके बावजूद भी यह अत्यन्त सौम्य और सरल होते है, तथा साधक की प्रत्येक आज्ञा का पालन करता है,

साधना प्रयोग

इस साधना को इस दिवस या किसी भी शुक्रवार की रात्रि को सम्पन्न किया जा सकता है, साधक काली धोती पहिन कर काले आसन पर दक्षिण दिशा की ओर मुंह कर खड़ा हो जाय, अपने सामने एक लोहे या स्टील की थाली में सिन्दूर से पुरुष आकृति बनावे और उस आकृति के सिर पर तीन तांत्रिक नारियल रखे, पैरों के पास तीन हकीक नग रखें, मध्य में शूकर दन्त रखे और थाली में ही पांच तेल के दीपक लगा दें, और फिर दो रंगों की हकीक माला अथवा दो रंगों की स्फटिक माला से २१ माला मंत्र जप करें।

पिशाच सिद्धि मन्त्र

।। ऐं क्रीं क्रीं खिं खिं खिचि खिचि पिशाच खिं खिं फट्।।

जब २१ माला मन्त्र जप पूरा हो जाय तब थाली में रखी हुई सारी सामग्री तथा वह माला ले कर घर के बाहर किसी स्थान पर रास्ते पर रख दें, और उसके चारों ओर पानी के लोटे में भरे हुए जल से एक घेरा बना ले और थाली तथा लोटा लेकर वापिस घर आ जाय दोनों बर्तन मांज ले फिर साधक स्नान कर ले ऐसा होने पर पिशाच सिद्ध होता है।

इसके बाद जब भी उपरोक्त मंत्र का पांच बार साधक उच्चारण करेगा तब वह अदृश्य रूप में साधक के सामने हाथ जोडे खड़ा होगा, उसे जो भी आज्ञा दी जायेगी वह तत्क्षण निश्चय ही पूरी होगी।

ये सभी साधनाएं महत्वपूर्ण है, साधक इनको सम्पन्न करे और सिद्धि मिलने पर किसी को बतावे नहीं, वे इस प्रकार की साधनाओं का समाजोपयोगी सदुपयोग करे।

जालन्धर पीठ सिद्ध

धूमावती सिद्ध साधना

२४-१२-८६

यों तो दस महाविद्याओं में धूमावती को काफी महत्व दिया है, क्यों कि यह शत्रुओं का मर्दन करने के लिये विख्यात रही है। पत्रिका के पिछले अंको में मांत्रोक्त धूमावती साधना को स्पष्ट किया है, पर इस बार धूमावती से संबंधित एक अत्यन्त दुर्लभ और गोपनीय तांत्रोक्त रहस्य प्राप्त हुआ है, जो कि आगे के पृष्ठो में स्पष्ट कर रहा हूं।

जालन्धर नाथ चोरासी सिद्धों में माने गये है, और गुरु गोरखनाथ की टक्कर के योगी रहे है, उन्होंने अपने जीवन में धूमावती पर एक ही ग्रन्थ की रचना की थी, और उसी की दुर्लभ पाण्डुलिपी हमें प्राप्त हुई है, जो कि धूमावती साधना की श्रेष्ठतम विधि है।

आगे की पंक्तियों में महायोगी सिद्ध जालन्धरनाथ द्वारा प्रणीत तांत्रोक्त धूमावती साधना को इस महत्वपूर्ण दिवस पर स्पष्ट कर रहा हूं।

पौष कृष्ण १२ को धूमावती सिद्धि दिवस माना गया है, जो कि अंग्रेजी तारीख के अनुसार इस वर्ष २४–१२–८९ को स्पष्ट हो रहा है, यह दिन अपने आपमें साधकों के लिए अत्यन्त महत्वपूर्ण है।

जालन्धर नाथ धूमावती साधना के सिद्धतम आचार्य थे, उन्होंने सर्वथा नवीन पद्धति से धूमावती सिद्ध की थी, कहते है, कि उनके नेत्रों में अग्नि का प्रत्यक्ष प्रभाव था, और वे तीक्ष्ण दृष्टि से लोहे को भी देख लेते थे तो वह भी पिघल कर पानी बन जाता था।

इसी परम्परा में गढवाल की राजधानी टिहरी के

राजगुरू भेदानन्द जी आते है, जिन्होंने कुछ ही वर्ष पहले शरीर त्यागा है, वे धूमावती के सिद्धतम आचार्य थे और पूरे गढ़वाल में ही नहीं, अपितु पूरे भारतवर्ष में उनका प्रभाव रहा है।

वे कई महत्वपूर्ण घरानों के राजकुमारों को तांत्रोक्त दीक्षा और साधना सिद्ध कराने के लिए नदी के किनारे ले जाते और वहां उन्हें यह साधना सिद्ध करवाते पूरे भारतवर्ष में योगीराज भेदानन्द जी को ही जालन्धर पीठ सिद्ध धूमावती साधना का पूर्णता के साथ ज्ञान था।

इस बात के तो सैकड़ों प्रत्यक्ष दर्शी गवाह है, कि वे नदी के किनारे धोती ओढ़कर सो जाते थे, और अन्दर धूमावती मन्त्र जप करते, यों उन्हें धूमावती पूर्ण रूप से सिद्ध थी।

एक निश्चित संख्या में मन्त्र जप करने के बाद वे चेहरे से धोती हटा कर जिस शत्रु को भी देख लेते, वह वहीं पछाड़ खा कर गिर जाता, और उसकी तत्काल मृत्यु हो जाती। भेदानन्द जी ने नदी के किनारे ही हरे भरे विशाल पेड़ पर इस प्रकार का मन्त्र जाप कर दृष्टि डाली थी, तो वह पेड़ अन्दर ही अन्दर सूख कर ठूंठ हो गया था, और उसके पत्ते झड़ गये थे, ऐसा लगा था, कि जैसे यह पेड़ अपने जीवन में कभी हरा भरा रहा ही न हो, वह पेड़ आज भी नदी के किनारे सूखे ठूंठ की तरह खड़ा हुआ है।

धूमावती दस महाविद्याओं में एक प्रमुख महाविद्या हैं, जिसे सिद्ध करना साधक का सौभाग्य माना जाता है। जो साधक अपने जीवन में निश्चिन्त और निर्भीक रहना चाहता है, जो अपने जीवन में निरन्तर उन्नति करना चाहता है, जिस साधक में थोड़ा बहुत भी दम खम होता हैं, वह धूमावती साधना अवश्य ही सिद्ध करता है।

धूमावती साधना

महायोगी सिद्ध जालन्धर नाथ जी ने धूमावती सिद्धि के छः प्रमुख लाभ बताये है, जो कि केवल धूमावती साधना से ही प्राप्त हो सकते है। अन्य किसी भी प्रकार के देवी देवता या महाविद्या साधना करने पर ये लाभ प्राप्त नहीं हो सकते, जालन्धर नाथ अनुभव गम्य सिद्ध योगी थे, और उनका कथन अपने आप में प्रामाणिक कथन माना जाता हैं। उनके अनुसार निम्न छः लाभ केवल धूमावती के द्वारा ही संभव है।

१- धूमावती सिद्ध करने पर साधक का शरीर वज्र की तरह मजबूत और लोहे कीं तरह सुदृढ़ हो जाता है। उस पर सर्दी गर्मी भूख प्यास या किसी भी प्रकार के रोग का प्रभाव व्याप्त नहीं होता।

२- धूमावती सिद्ध करने पर व्यक्ति का शरीर वज्र की तरह मजबूत हो जाता है और उस पर बन्दूक, तलवार, या शस्त्र आदि का कोई भी प्रभाव व्याप्त नहीं होता।

३- धूमावती सिद्ध होने पर उसकी आंखों में साक्षात् अग्नि देव उपस्थित रहते है, वह तीक्ष्ण दृष्टि से जिस शत्रु को भी देख कर मन ही मन धूमावती मंत्र का उच्चारण करता है, वह शत्रु तत्क्षण भस्म हो जाता है, और निश्चय ही उसका प्राणान्त हो जाता है, वह किसी पेड़, किसी पक्षी या जिस किसी पर भी तीक्ष्ण दृष्टि डालता है, वह निश्चित रूप से समाप्त हो जाता है।

४- ऐसे साधक की आंखों में प्रवल सम्मोहन एवं आकर्षण शक्ति आ जाती है, जिसके फलस्वरूप वह किसी भीं पुरूष या स्त्री को हमेशा हमेशा के लिए अपने वश में कर सकता है।

५- ऐसी साधना करने वाले, की रक्षा धूमावती स्वयं करती रहती है, वह यदि शत्रुओं के बीच अकेला भी चला जाता है, तो उसका बाल भी बांका नहीं होता, चाहे कितने ही विरोधीं हो, आलोचक या निन्दक हो, उसके सामने प्रभावहीन एवं निस्तेज ही रहते है, और जब वह बोलता है तो व्यक्ति उसके समर्थन में ही रहता है, जिनको बडे प्रतिष्ठान के कार्य संभालने होते है, उनके लिए तो यह साधना वरदान स्वरूप है।

६- धूमावती सिद्ध करने पर उसके जीवन में शत्रु

नहीं रह पाते, उसमें श्राप देने की अद्भुत क्षमता आ जाती है. और यदि वह नहीं भी चाहता, तब भी उसका जो विरोधी या शत्रु होता है. उसका अपने आप पतन होने लग जाता है, ऐसा व्यक्ति वाद विवाद में या मुकदमों में निश्चय ही पूर्ण सफलता प्राप्त करता है।

यों तो इस महाविद्या साधना के अगणित लाभ है, परन्तु जो व्यक्ति आज के जीवन में उन्नति चाहता है, जो व्यक्ति शत्रुओं पर प्रहार कर विरोधियों को अपने अनुकूल बनाना चाहता है, जो अपने जीवन में निरन्तर उन्नति चाहता है, उसके लिए यह साधना अवश्य ही उपयोगी और अनुकूल है।

साधना रहस्य

यों तो इसके लिए धूमावती दिवस का प्रचलन तांत्रिक ग्रन्थों में हैं हो, जो कि पौष कृष्ण द्वादशी हैं परन्तु कोई भी साधक किसी भी मंगलवार से भी यह साधना प्रारम्भ कर सफलता अर्जित कर सकता हैं। इस साधना को कोई भी सम्पन्न कर सकता हैं तथा दिन या रात्रि में कभी भी यह साधना सम्पन्न की जा सकती है।

साधकों को चाहिए कि वे इस दिवस का महत्व समझे और इस दिन धूमावती साधना को अवश्य ही सम्पन्न करें।

साधना प्रयोग

मैं आगे के पृष्ठों में उस गोपनीय रहस्य को स्पष्ट कर रहा हूं जो महा सिद्ध जालन्धर नाथ जी ने धूमावती की सिद्ध करने के समय प्रयोग किया था।

साधक स्नान कर काली धोती धारण कर, व्याघ्र चर्म अथवा मृग चर्म पर बैठ जाय, यदि यह संभव न हो तो, ऊनी आसन बिछा कर दक्षिण दिशा की ओर मुंह कर बैठ जाय। सामने लकड़ी का बाजोट बिछा कर काला कपड़ा बिछा दें और उसके ऊपर लोहे की अथवा स्टील की थाली रख दे, इस थाली के अन्दर पूरी तरह से काजल लगा दें।

इसके बाद साधक चांदी की शलाका से या तिनके की सहायता से एक बूढ़ी स्त्री का चित्र अंकित करें जिसके बाल बिखरे हुए हो, और जिसके गले में नरमुण्ड की माला धारण की हुई हो, यह धूमावती का प्रतीक चिन्ह है।

इसके बाद साधक एक दूसरी स्टील की थाली में ग्यारह तेल के दीपक लगावे, इसमें किसी भी प्रकार के तेल का प्रयोग किया जा सकता है. इस साधना में अगरबत्ती आदि की आवश्यकता नहीं होती।

इसके बाद साधक थाली में जो धूमावती का चित्र बनाया है, उसके सिर के चारों ओर ग्यारह हकीक नग रखे, धूमावती के बांये पैर के पास लघु नारियल स्थापित करे और दाहिने पैर के पास सियारसिंगी स्थापित करे। धूमावती के वक्षस्थल पर या हृदय पर मोती शंख रखें और उसके चारों ओर पांच रूद्राक्ष के दाने रखें।

इसके बाद साधक हाथ में जल ले कर संकल्प ले, कि मैं अमुक गोत्र अमुक पिता का पुत्र अमुक नाम का साधक पूर्ण क्षमता के साथ जालन्धर पीठ सिद्ध धूमावती को सिद्ध कर रहा हूं, ऐसा कह कर जमीन पर छोड़ दे।

इसके बाद हाथ में जल ले कर निम्न मन्त्र पढे, उसे विनियोग कहते है–

विनियोग प्रयोग

ॐ अस्य मातृकामन्त्रस्य ब्रह्मा ऋषिर्गायत्री छन्दो मातृकासरस्वती देवता ह्लो बीजानि स्वराश्शक्तयस्तदुभयकोलकमभीष्ट सिध्यर्थे विनियोगः।

विनियोग के बाद निम्न अंगो को स्पर्श करते हुए, अंग न्यास करे -

अंग न्यास

ॐ धां हृदयाय नमः
ॐ धीं शिरसे स्वाहा
ॐ धूं शिखायै वषट्
ॐ धैं कवचाय हुं
ॐ धौं नेत्र त्रयाय वौषट
ॐ धः अस्त्राय फट्

इसके बाद साधक करन्यास करे, इसमें जिन जिन अंगूठे या उंगली का वर्णन है, उसको देखते हुए उच्चारण करे, इसे करन्यास कहते है ।

कर न्यास

ॐ धां अंगुष्ठाभ्यां नमः
ॐ धीं तर्जनीभ्यां स्वाहा,
ॐ धूं मध्यमाभ्यां वौषट
ॐ धैं अनामिकाभ्यां हुं
ॐ धौं कनिष्ठिकाभ्यां वौषट
ॐ धः करतलकर पृष्ठांभ्यां फट्

इसके बाद बांये हाथ में थोडे से चावल ले कर इन चावलों को कुंकुम से रंग कर यंत्र पर निम्न मंत्र पढ़ते हुए थोड़े थोड़े डाले जिससे की प्राण प्रतिष्ठा प्रयोग सम्पन्न किया जा सके ।

प्राण प्रतिष्ठा

आं ह्रीं क्रों यं रं लं वं शं षं सं हं ॐ क्षं सं हसः ह्रीं ॐ हं सः श्री मद्धमावत्या प्राणा इह प्राणाः ।। आं ह्रीं क्रों यं रं लं वं शं षं सं हं ॐ क्षं सहसः ह्रीं ॐ हंसः श्री मावतया जीवन इह स्थितः ॐ ह्रोक्रों-यं रं ल वं शं षं सं हं ॐ क्ष सं हं सः ह्रीं ॐ हंसः श्री मद्धमावत्यास्सर्वेन्द्रियाणि इह स्थितानि । आं ह्रीं क्रों यं रं लं वं शं षं सं हं ॐ क्ष सं हंसः श्री मद्धमा-वत्या वाड्मनश्चक्षूश्श्रोत्रघ्राणप्राणा इहागत्य सुख श्चिरन्तिष्ठन्तु स्वाहा ।।

इसके बाद साधक दोनों हाथों में पुष्प ले कर धूमावती यंत्र पर चढ़ाते हुए निम्न प्रकार से ध्यान करें ।

धूमावती ध्यान

विवर्णा चंचला दृष्टा दीर्घा च मलिनाम्बरा ।
विमुक्तकुन्तला रूक्षा विधवा विरलद्विजा ।
काकध्वजरथारूढा विलम्बित पयोधरा ।
शूर्प्यहस्तातिरूक्षा च धूतहस्ता वरान्विता ।
प्रवृद्धघोंणा तु भृशंकुटिला कुटिलेक्षणा ।
क्षुत्पिपासार्दिता नित्यम्भयादा कलहास्पदा ।।

इसके बाद साधक सफेद हकीक माला से निम्न धूमावती मंत्र की २१ माला मंत्र जप करे, इस अवधि में साधक उठे नहीं और पूरी २१ माला मंत्र जप होने के बाद ही उठे, साथ ही साथ इस बात का भी ध्यान रखे कि जो ग्यारह तेल के दीपक लगाये वे बराबर जलते रहे।

धूमावती मंत्र

धूं धूं धूमावती ठः ठः

जब मंत्र जप पूरा हो जाय तब साधक थाली में जो कुछ तांत्रोक्त सामग्री है, उसके मध्य में वह हकीक माला भी रख दे और वह सारी सामग्री घर के बाहर दक्षिण दिशा की ओर जमीन में गाड़ दे । अथवा नदी या तालाब में विसर्जित कर दे, यदि साधक दिन में साधना कर रहा है तो रात्रि को यह सामग्री विसर्जित कर सकता है, अथवा दिन में भी इस पूरी सामग्री को जो थाली में है, वह जमींन में गाड़ सकता है अथवा नदी, तालाब या समुद्र में विसर्जित कर सकता है ।

ऐसा करने पर यह धूमावती साधना पूर्ण रूप से सिद्ध हो जाती हैं । यद्यपि यह साधना दिखने में अत्यन्त सरल प्रतीत होती है परन्तु इसकी विधि और इसका प्रयोग अपने आप में महत्वपूर्ण है, जिन जिन लोगों ने भी इस साधना को सम्पन्न किया हैं उन्हें उपरोक्त बताये लाभ प्रतीत हुए हैं ।

वास्तव में ही साधकों का सौभाग्य हैं कि उन्हें जालन्धर नाथ जी द्वारा प्रणीत इतनी दुर्लभ साधना प्राप्त हुई है, उन्हें अवश्य ही इस दिन का उपयोग करते हुए यह साधना सम्पन्न करनी चाहिए ।

इस साधना में वर्णित सभी सामग्री जालन्धर नाथ द्वारा प्रणित मंत्रों से सिद्ध एवं प्राण प्रतिष्ठायुक्त होनी चाहिए तभी पूर्ण अनुकूलता प्राप्त हो सकती है ।

भुवनेश्वरी रहस्य साधना

१७-१२-८९

तांत्रिक ग्रन्थों में भगवती भुवनेश्वरी को आद्या शक्ति कहा गया है, यों तो भगवती के दस प्रमुख स्वरूप है, जिन्हे दस महाविद्याएं कहा गया है

काली तारा महा-विद्या षोडशी भुवनेश्वरी।
भैंरवी छिन्नमस्ता च विद्या धूमावती तथा।।
बगला सिद्ध-विद्या च मातंगी कमलात्मिका।
एता दश महा-विद्या सिद्ध-विद्या प्रकीर्तिता।।

अर्थात १- काली, २- तारा, ३- षोडशी, ४- भुवनेश्वरी, ५- भैरवी ६- छिन्नमस्ता, ७- धूमावती, ८- बगला, ९- मातंगी, १०- कमला, इन दस स्वरूपों को महाविद्या कहा गया है।

पर इन दस महाविद्याओं में भी भुवनेश्वरी को आद्या शक्ति या मूल प्रकृति कहा गया है,और इसीलिए तांत्रिक ग्रन्थों में स्पष्ट किया गया है, कि जिसने अपने जीवन में भगवती भुवनेश्वरी को सिद्ध नहीं किया वह साधक हो ही नही सकता।

सिद्धाश्रम पंचांग के अनुसार पौष कृष्ण ५ तदनुसार इस वर्ष १७-१२-८९ को भगवती "भुवनेश्वरी दिवस" है, इस दिन इसको सिद्ध करने पर सम्पूर्ण सिद्धि और सफलता प्राप्त होती है।

भुवनेश्वरी तो सही अर्थो में जीवन का आधार है, वह सम्पूर्ण जीवन को जगमगाहट प्रदान करने वाली और सम्पूर्ण जीवन को आलोकित करने वाली है, भौतिक जीवन में तो भुवनेश्वरी का सर्वाधिक महत्व है।

महर्षि अगस्त्य ने तो भुवनेश्वरी के बिना जीवन की कल्पना ही नहीं की है, महर्षि अगस्त्य ही नहीं अपितु

विश्वामित्र, कणाद, स्वामी शंकराचार्य, योगाचार्य और गुरु गोरखनाथ तक ने यह स्वीकार किया है, कि भौतिक और आध्यात्मिक जीवन में पूर्णता एक मात्र भुवनेश्वरी साधना से ही संभव है।

गुरु गोरखनाथ ने तो भुवनेश्वरी सिद्ध करने के बाद अपने ज्ञान बल और साधना बल से यह अनुभव किया था कि हमें अपने जीवन में अन्य देवी देवताओं की साधना करनी ही नहीं है, यदि कोई साधक पूर्ण रूप से भुवनेश्वरी साधना सम्पन्न कर लेता है, तो उसके जीवन में किसी भी दृष्टि से कोई अभाव नहीं रहता।

तंत्र सार एक महत्वपूर्ण ग्रन्थ है, जिसको अत्यन्त ही प्रामाणिक माना जाता है, उसमें भगवती भुवनेश्वरी साधना के दस लाभ स्पष्ट रूप से वर्णित किये हैं।

१- भुवनेश्वरी साधना से निरन्तर आर्थिक, व्यापारिक और भौतिक उन्नति होती ही रहती है, जो अपने भाग्य में दरिद्र योग लिखा कर लाया है, जो व्यक्ति जन्म से ही दरिद्री है, वह भी भुवनेश्वरी साधना कर अपनी दरिद्रता को समृद्धि में बदल सकता है।

२- भुवनेश्वरी साधना ही एक मात्र कुण्डलिनी जागरण साधना है, इसी साधना से स्वतः शरीर स्थित चक्र जागृत होने लगते हैं, और अनायास उसकी कुण्डलिनी जागृत हो जाती है, और ऐसा होने पर उसका सारा जीवन जगमगाने लग जाता है।

३- एक मात्र भुवनेश्वरी साधना ही ऐसी है, जो जीवन में भौतिक उन्नति और आध्यात्मिक प्रगति एक साथ प्रदान करती है।

४- भुवनेश्वरी को आद्या माँ कहा गया है, फलस्वरूप भुवनेश्वरी साधना से योग्य संतान प्राप्त होती है, और पूर्ण संतान सुख प्राप्त होता है।

५- भुवनेश्वरी साधना इच्छित साधना है, यदि पूर्ण रूप से भुवनेश्वरी को सिद्ध कर लिया जाय तो व्यक्ति जो भी इच्छा या आकांक्षा रखता है, वह इच्छा अवश्य ही सम्पन्न होती है।

६- भुवनेश्वरी सम्मोहन स्वरूपा है, तंत्र सार के अनुसार भुवनेश्वरी साधना करने से पुरुष या स्त्री का सारा शरीर एक अपूर्व सम्मोहन अवस्था में आ जाता है, जिसके व्यक्तित्व से लोग प्रभावित होने लगते हैं, और वह जीवन में निरन्तर उन्नति करता रहता है।

७- भुवनेश्वरी भोग और मोक्ष दोनों को एक साथ प्रदान करने वाली है, यही एक मात्र ऐसी साधना है जिसको सम्पन्न करने पर जीवन में सम्पूर्ण भोगों की प्राप्ति होती है, तो जीवन के अन्त में पूर्ण मोक्ष प्राप्ति भी होती है।

८- भुवनेश्वरी "रोगान शेषा" है, अर्थात् भुवनेश्वरी साधना करने पर असाध्य रोग भी समाप्त हो जाते हैं, और जीवन में अथवा परिवार में किसी प्रकार का कोई रोग व्याप्त नहीं होता।

९- "तोड़ल तंत्र" में बताया है, कि भुवनेश्वरी शत्रु संहारिणी है, इसकी साधना करने वाले साधक के शत्रु स्वतः ही समाप्त हो जाते हैं, यहां तक कि जो भी व्यक्ति इस प्रकार के साधक के प्रति दुराग्रह या शत्रु भाव रखते हैं, वे अपने आप समाप्त होते रहते हैं, और उनका जीवन बरबाद हो जाता है।

१०- भुवनेश्वरी को योग माया कहा गया है, इसकी साधना कर जीवन में धर्म, अर्थ, काम, और मोक्ष चारों पुरुषार्थों की प्राप्ति निश्चित रूप से होती है।

इन सारे तथ्यों को केवल एक ऋषि या केवल एक साधक ने ही स्वीकार नहीं किया है, अपितु जिन जिन योगियों या महर्षियों ने इस साधना को सम्पन्न किया है उन्होंने यह अनुभव किया है कि यदि साधक अपने जीवन में इस साधना को सम्पन्न नहीं करता, तो वह जीवन ही

बेकार चला जाता है। उसके जीवन में कोई रस नहीं रहता, और यदि सिद्धाश्रम के द्वारा वर्णित इस सिद्धि दिवस का उपयोग नहीं किया जाता, तो ऐसा महत्वपूर्ण दिन वापिस एक पूरे वर्ष के बाद ही प्राप्त हो सकता है।

यों तो तांत्रिक ग्रन्थों में बताया जाता है, कि भुवनेश्वरी साधना को किसी भी गुरूवार से प्रारम्भ की जा सकती है, पर यदि भुवनेश्वरी सिद्धि दिवस का ही उपयोग किया जाय तो सिद्धि मिलने में ज्यादा सुविधा एवं अनुकूलता प्राप्त होती है।

यों तो भुवनेश्वरी साधना की अनेक विधियां शास्त्रों में प्रचलित है, पत्रिका के पिछले अंकों में भी हमने मंत्रात्मक दृष्टि से भुवनेश्वरी साधना का विस्तार से विवरण दिया था, और उस प्रकार से साधना सम्पन्न कर सैकड़ों साधकों ने लाभ उठाया भी है, परन्तु इस बार सर्वथा गोपनीय, महत्वपूर्ण और दुर्लभ साधना प्रयोग दे रहे है। जो कि अपने आप में "तंत्रात्मक प्राणस्वरूपा भुवनेश्वरी साधना" कहा जाता है।

तंत्रात्मक भुवनेश्वरी साधना

इस दुर्लभ भुवनेश्वरी प्रयोग को महर्षि विश्वामित्र ने अपने योग बल से प्राप्त किया था, और उन्होंने इसे "भुवनेश्वरी पंजर सिद्धि" के शब्द से सम्बोधित किया है, पंजर का तात्पर्य है, चारों तरफ से रक्षा करने वाला प्रयोग। जिस प्रकार कोई पक्षी पिंजरे में बैठ जाता है, तो वह चारों तरफ से सुरक्षित रहता है, बिल्ली आदि किसी प्रकार का अन्य प्राणी उसको हानि नहीं पहुँचा सकता। उसी प्रकार से यह प्रयोग भी पूर्णतः पंजर है, जिससे कि इस साधना को सिद्ध करने वाले साधक को किसी प्रकार की हानि नहीं होती और वह निश्चिन्तता से आगे बढ़ता हुआ साधना को पूर्ण कर लेता है।

इस साधना की दूसरी विशेषता यह है, कि अन्य प्रकार से साधनाएं करने पर भले ही असफलता मिल

कहते हैं, कि इस प्रयोग को प्राप्त करने के लिए वशिष्ठ को स्वयं अपने पैरों से चल कर विश्वामित्र के द्वार तक जाना पड़ा और इसे प्राप्त करने के लिए शिष्यता भी स्वीकार करनी पड़ी।

जाय, परन्तु यह साधना प्रयोग अपने आपमें अचूक है, अभेद्य है, इस प्रकार से भुवनेश्वरी तांत्रिक प्रयोग करने पर साधक को निश्चय ही सिद्धि और सफलता मिलती है और ऊपर भुवनेश्वरी साधना के जो लाभ बताये है, वह साधक को स्वतः प्राप्त होने लगते है।

यह प्रयोग अत्यन्त गोपनीय और दुर्लभ रहा है, कहते है, कि इस प्रयोग को प्राप्त करने के लिए वशिष्ठ को स्वयं अपने पैरों से चल कर विश्वामित्र के द्वार तक जाना पड़ा और इसे प्राप्त करने के लिए शिष्यता भी स्वीकार करनी पड़ी। इस प्रयोग को प्राप्त करने के बाद वशिष्ठ ने कहा-"मैं यदि अपना पूरा जीवन भी दाव पर लगा कर इस विद्या को प्राप्त कर लेता तो भी यह सौदा महंगा नही था"।

गुरु गोरखनाथ तो इस विद्या के अन्यतम आचार्य थे और उन्होने अपने ज्ञान बल से विश्वामित्र की आत्मा को अपने सामने प्रतिष्ठित कर उनसे ही यह दुर्लभ भुवनेश्वरी पिंजर" प्रयोग प्राप्त किया, और उसके बाद ही यह साधना प्रयोग उनके शिष्यों के द्वारा जनसाधारण में प्रचलित हुआ, फिर भी यह साधना रहस्य गोपनीय बना रहा, क्योंकि गुरू अपने शिष्य को कण्ठस्थ करा देता, और इसी प्रकार यह विद्या आगे बढ़ती रही।

गोरखनाथ की परम्परा में ही योगी अवधूत हुए

जिन्होंने इस दुर्लभ साधना प्रयोग को अपने गुरु से प्राप्त कर ताड़ पत्रों पर अंकित किया जिससे कि यह सुलभ हो सका।

वास्तव में ही प्रयोग अत्यन्त सरल और संक्षिप्त होते हुए भी पूर्ण एवं प्रभावशाली है। जो साधक इस साधना प्रयोग को सम्पन्न करता है, वास्तव में ही वह जीवन में बहुत कुछ प्राप्त कर लेता है।

"मैं यदि अपना पूरा जीवन दाव पर लगा कर इस विद्या को प्राप्त कर लेता तो भी यह सौदा महंगा नहीं था"।

सविधि तांत्रोक्त भुवनेश्वरी साधना रहस्य

साधक प्रातः काल उठ कर स्नान संध्या आदि से निवृत्त हो कर पूर्व की ओर मुंह कर आसन पर बैठ जाय, इस साधना में सफेद ऊनी आसन या मृग चर्म का प्रयोग किया जाना चाहिए। साधक स्वयं सफेद धोती धारण करे, साधिका यदि इस साधना को सम्पन्न करना चाहें तो सफेद साड़ी पहिने, प्रातः काल अपने सिर के बाल धो ले और बिना तेल लगाये बालों को खुला रखे।

इसके बाद साधक अपने सामने "तांत्रोक्त सिद्ध भुवनेश्वरी यंत्र" को स्थापित करें, जो कि महर्षि विश्वामित्र द्वारा प्रणीत प्राण संजीवनी मुद्रा से सिद्ध एवं प्राण प्रतिष्ठा युक्त हो। वास्तव में ही इस प्रकार से प्राण प्रतिष्ठित यन्त्र ही प्रयोग में लाया जा सकता है, यद्यपि इस प्रकार से प्राण प्रतिष्ठा करना अत्यन्त कठिन कार्य है, और बहुत कम पंडित ही इस प्रकार के यन्त्र को प्राण प्रतिष्ठित एवं मन्त्र सिद्ध कर पाते है, पर ऐसा यंत्र कई कई पीढ़ियों के लिए साधक के लिए लाभ दायक बना रहता है।

अपने सामने लकड़ी का बाजोट बिछा कर उस पर सफेद रेशमी वस्त्र बिछाएं और उस पर थाली रखे, थाली के चारों कोनों पर कुंकुम से पंच कोण बनावे और थाली के के मध्य में त्रिकोण अंकित करे। इसके बाद थाली के मध्य में ही इस प्रकार का मन्त्र सिद्ध यन्त्र स्थापित करे, और उसे 'ॐ भुवनेश्वर्यै नमः" मन्त्र का उच्चारण करते हुए शुद्ध जल से स्नान करावे, इसके बाद इसी नाम का उच्चारण करता हुआ, उसे दूध से, दही से, घृत से मधु से, और शर्करा से स्नान करावे, फिर इन पांचों चीजों को मिला कर पंचामृत से स्नान करावे, स्नान कराते समय बराबर इसी मंत्र का उच्चारण करता रहे। इसके बाद पुनः शुद्ध जल से यंत्र को स्नान करा कर अलग किसी पात्र में रख दें, और उस पात्र का जल अलग कटोरे में ले कर एक तरफ रख दें, जिसे पूजा समाप्त होने के बाद जमीन में गाड़ दें।

इसके बाद उस थाली को मांज कर पोंछ कर सिन्दूर से मध्य में पंच कोण बनावे और थाली के अन्दर ही चारों कोनो पर सिन्दूर से ही त्रिकोण अंकित करे और मध्य में चावल की ढेरी बना कर उस पर यंत्र को स्थापित करे।

इसके बाद यंत्र पर सिन्दूर से ही दस बिन्दियां लगावे और यंत्र पर अक्षत तथा पुष्प चढ़ाने के बाद सुगन्धित पुष्पों की माला यंत्र पर अर्पित करे।

इसके बाद सामने अगरबत्ती के शुद्ध घृत का दीपक प्रज्वलित करें और यंत्र पर जहां दस स्थानों पर सिन्दूर की दस बिन्दियां लगाई थी, वहां से थोड़ा थोड़ा सिन्दूर लेकर अपने ललाट के मध्य में तिलक करे।

इसके बाद थाली में जो चारो कोनों पर त्रिकोण बनाये है, उनमें से प्रत्येक त्रिकोण पर छोटी छोटी चावल की ढेरियां बना कर प्रत्येक पर एक एक लघु नारियल

स्थापित करे, और लघु नारियल पर सिन्दूर का तिलक करे। यंत्र के सामने दस हकीक नग पत्थर रख दे, जो कि मंत्र सिद्ध हो, और प्रत्येक हकीक नग पर सिन्दूर का तिलक करे, यह दस महा शक्तियों के प्रतीक चिन्ह है। इसके बाद यंत्र के बांई ओर चावल की ढेरी बनाकर "मोती शंख" स्थापित करें और दाहिनी ओर चावल की ढेरी बना कर "सिद्धि फल" स्थापित करें। फिर इन दोनों की संक्षिप्त पूजा करें, सिन्दूर का तिलक करे और पुष्प समर्पित करें।

इसके बाद यंत्र के सामने दूध का बना हुआ प्रसाद अर्पित करें तथा एक पात्र में पंचामृत बना कर रखें (पंचामृत दूध, दही घी, शहद और शक्कर को मिला कर बनाया जाता है) इसके पास ही पानी से भरा हुआ, लोटा रख दें, और फिर प्रयोग प्रारम्भ करें।

भुवनेश्वरी तांत्रोक्त सपर्या प्रयोग

साधक सबसे पहले अपनी चोटी के गांठ लगावे, अपने अंगूठे से अपने ललाट पर सिन्दूर का तिलक करे, और फिर सिन्दूर का तिलक अपने सिर के मध्य भाग में हृदय पर तथा नाभि पर भी करें। इसके बाद हाथ में जल लेकर सकल्प करें।

विनियोग

ॐ अस्य श्री भुवनेश्वरी पंजर मंत्रस्य श्री शक्तिः ऋषिः। गायत्री छन्दः। श्री भुवनेश्वरी देवता। हं बीजं। ईं शक्तिः। रं कीलकं। सकल-मनो-वांछित-सिद्धयर्थे पाठे विनियोगः॥

ऐसा कह कर हाथ मे लिया जल जमीन पर छोड़ दे और इसके बाद न्यास करे।

ऋष्यादि न्यास

श्री शक्ति-ऋषये नमः शिरसि।
गायत्री-छन्दसे नमः मुखे।
श्री भुवनेश्वरी-देवतायै नमः हृदि
हं बीजाय नमः गुह्ये।
ईं शक्तये नमः नाभौ।
रं कीलकाय नमः पादयोः।
सकल-मनो-वांछित-सिद्धयर्थे पाठे विनियोगाय नमः सर्वांगे।

न्यास का तात्पर्य है कि इसमें शरीर के जिन जिन अंगो का वर्णन आया है, साधक मंत्र का उच्चारण करते हुए शरीर के उस उस अंग को दाहिने हाथ से स्पर्श करे, जिससे कि भगवती भुवनेश्वरी पूर्ण रूप से शरीर के सभी अंगो में समाहित हो सके।

इसके बाद साधक षडंग न्यास करे।

षडंग न्यास

षडंग न्यास	अंग-न्यास	कर-न्यास
ह्रीं श्रीं ऐं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
"	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
"	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
"	अनामिकाभ्यां हुं	कवचाय हुं
"	कनिष्ठकाभ्यां वषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
"	करतल करपृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

इस प्रकार से न्यास करने के बाद दोनों हाथ जोड़ कर भगवती भुवनेश्वरी का ध्यान करे।

ध्यान

ध्यायेद् ब्रह्मादिकानां कृत-जनि-जननी योगिनीं योग-योनिम्।
देवानां जीवनायोज्ज्वलित-जय-पर ज्योतिरूपांग-धात्रीम्।
शंख चक्रं च बाणं धनुरपि दधतीं दोश्चतुष्का-म्बुजातैः।
मायामाद्यां विशिष्टां भव-भव-भुवनां भू-भवा भार-भूमिम्।

ध्यान करने के बाद साधक सफेद स्फटिक माला से वहीं पर बैठे बैठे निम्न दुर्लभ गोपनीय मंत्र की २१ माला मंत्र जप करें ।

भगवती भुवनेश्वरी तांत्रोक्त पिंजर महामंत्र

ॐ क्रों श्रीं ह्रीं ऐं सौं ह्रीं नमः

जब मंत्र जप पूरा हो जाय तब साधक दस बत्तियां लगा कर भगवती भुवनेश्वरी की आरती सम्पन्न करे, या जगदम्बा या दुर्गा की आरती स्मरण हो तो उसे करे, इसके बाद भगवती भुवनेश्वरी के सामने जो प्रसाद चढ़ाया हुआ है, वह थोड़ा सा स्वयं भक्षण करे. और अपने परिवार वालों को बांटे ।

महर्षि अगस्त्य ने तो भुवनेश्वरी के बिना जीवन की कल्पना ही नहीं की है, महर्षि अगस्त्य ही नहीं अपितु विश्वामित्र, कणाद, स्वामी शङ्कराचार्य, योगाचार्य और गुरु गोरखनाथ तक ने यह स्वीकार किया है, कि भौतिक और आध्यात्मिक जीवन में पूर्णता एक मात्र भुवनेश्वरी साधना से ही संभव है ।

इसके बाद पूर्ण सिद्धि के लिये किसी पात्र में समिधायें (लकड़ियां) जला कर इसी मंत्र की पूरी एक सौ आहुतियां दे दें तब यह प्रयोग पूर्ण माना जाता है ।

भुवनेश्वरी यंत्र के आस पास जो लघु नारियल आदि सामग्री है, उसे एक सफेद रेशमी वस्त्र में बांध कर घर के भण्डार गृह में या जहां धनराशि आदि रखी जाती है, अथवा तिजोरी में सम्मानपूर्वक स्थापित कर दें और यंत्र को पूजा स्थान में सफेद रेशमी वस्त्र बिछाकर स्थापित करे ।

इसके बाद यदि श्रद्धा हो तो एक ब्राह्मण को या एक कुंवारी कन्या को भोजन करा दें, अथवा मन्दिर में दान दक्षिणा आदि भिजवा दें ।

इस प्रकार यह प्रयोग सम्पन्न होता है अपने आप में यह महत्वपूर्ण और दुर्लभ और गोपनीय प्रयोग हैं । पत्रिका पाठकों के लिए यह दिन वरदान स्वरूप है, उन्हें चाहिए कि वे इस दिन का उपयोग करते हुए, भगवती भुवनेश्वरी की इस दुर्लभ गोपनीय साधना को पूर्णता के साथ सम्पन्न करे ।

भ विधि

श्री पदमावती सिद्धि प्रयोग

(५-१२-८६)

जब कुबेर ने भगवान शिव की हजारों वर्ष तक तपस्या की और जब भगवान शिव प्रत्यक्ष प्रकट हुए तो कुबेर ने उनके सामने अपनी इच्छा प्रकट की, कि मैं जीवन में इतना अधिक धन, द्रव्य, भोग और ऐश्वर्य प्राप्त करना चाहता हूं जितना संसार में किसी के पास न हो।

तब भगवान शिव ने कुबेर को अपना शिष्य बना कर उसे श्री पदमावती सिद्धि प्रयोग समझाया जो कि सर्वथा रहस्यमय और गोपनीय था। इस साधना को सम्पन्न कर कुबेर देवताओं के कोषाधिपति बन सके।

"विश्व सार तंत्र के अनुसार" ऐसा प्रयोग न जीवन में बन सका है, और न भविष्य में बन सकेगा, यदि सारे तंत्रों का निचोड़ निकाला जाय तो भी यह तंत्र प्रयोग सर्वश्रेष्ठ और अद्वितीय कहा जा सकता है।

पदमावती सिद्धि दिवस के अवसर पर मैं विश्व सार तन्त्र में वर्णित उस दुर्लभ प्रयोग को पाठकों के लिये प्रस्तुत कर रहा हूं जो कि सर्वथा गोपनीय तो रहा ही है, पर जिसे भगवान शिव ने स्वयं कुबेर को बताया था।

वास्तव में ही पदमावती धन धान्य, ऐश्वर्य एवं अतुल सम्पदा की देवी है, भगवती लक्ष्मी स्वयं उसकी मात्र अंशी भूत स्वरूपा है, इसीलिए शास्त्रों में पदमावती साधना को अत्यन्त श्रेष्ठतम महत्व दिया है।

सिद्धाश्रम पंचांग के अनुसार प्रत्येक वर्ष मार्गशीर्ष शुक्ल ७ तदनुसार ५-१२-८९ को 'पदमावती सिद्धि दिवस'' है, जिस दिन प्रत्येक साधक, साधना कर अपने जीवन में पूर्णता और सफलता प्राप्त कर सकता है।

तांत्रोक्त प्रयोग

इस बार पत्रिका के इन पन्नों पर पर मैं पदमावती के उस दुर्लभ तांत्रोक्त प्रयोग को स्पष्ट कर रहा हूं जो कि निश्चय ही अब तक गोपनीय रहा है। तांत्रोक्त प्रयोग की यह विशेषता होती है कि उसमें मंत्र जप तो होता ही है, पर क्रिया पद्धति मुख्य रूप से महत्व रखती है, तंत्र में केवल मंत्र जप ही पर्याप्त नहीं होता, अपितु उसमें जिन साधनाओं और उपकरणों की आवश्यकता होती है,उनका प्रयोग भी आवश्यक माना जाता है।

यह पदमावती प्रयोग भी तांत्रोक्त पद्धति है, यदि मैं सत्य कहूं तो वास्तव में ही इसके समान आर्थिक उन्नति प्रदान करने वाला अन्य कोई प्रयोग इस संसार में नहीं है जिस प्रयोग से दरिद्र कुबेर अतुलनीय सम्पदा के स्वामी हो सके, जिस प्रयोग से विश्वामित्र सर्वश्रेष्ठ धनाधिपति हो सके, जिस प्रयोग से वशिष्ठ ने इतनी क्षमता प्राप्त करली, कि वह दशरथ जैसे प्रतापी राजा को कर्ज दें सके जिस प्रयोग से गुरू गोरखनाथ लाखों शिष्यों का नित्य भण्डारा करने में समर्थ हो सके, और जिस प्रयोग से स्वामी शंकराचार्य ने स्वर्ण वर्षा कर के बता दिया, वह प्रयोग किस प्रकार से कमजोर हो सकता है।

एक नहीं सैकड़ो तांत्रिकों ने पदमावती प्रयोग को जीवन का अद्वितीय खजाना कहा है, जिन जिन योगियों ने, साधकों ने या व्यक्तियों ने यह साधना सम्पन्न की है, उन लोगों ने स्वीकार किया है कि यह साधना सिद्ध होते होते धन धान्य की वर्षा होने लगती है, कई गुना व्यापार बढ़ जाता है, रुके हुए पैसे प्राप्त होने लग जाते है, और अनायास ही भाग्योदय हो जाता है, ऐसा लगता है कि जैसे लक्ष्मी स्वयं घर में आ कर बैठ गई हो।

भगवान शिव ने स्वयं पार्वती को इस प्रयोग का रहस्य बताते हुए कहा है, कि यह प्रयोग हमेशा गुप्त रखना चाहिए, इसके माध्यम से जिस प्रकार से धन की वर्षा होती है, उससे व्यक्ति को भ्रमित न हो कर, स्वयं के जीवन को तो सुखमय बनाना ही चाहिए, दान, पुण्य आदि करके भी समाज में यश और सम्मान प्राप्त करना चाहिए।

विश्व सार तंत्र के अनुसार

विश्व सार तंत्र में इस प्रयोग से संबंधित कुछ हिदायते दी है, जिनका प्रयोग साधक को करना चाहिए, वे निम्न प्रकार से है-

१- पदमावती प्रयोग, पदमावती दिवस के दिन अथवा किसी भी शनिवार या मंगलवार से प्रारंभ किया जा सकता है। यदि पदमावती दिवस के दिन इस प्रयोग को किया जाता है, तो एक ही दिन में प्रयोग सम्पन्न हो जाता है, पर यदि इस दिन के अलावा अन्य किसी मंगलवार या शनिवार से यह प्रयोग प्रारम्भ किया जाता है तो पांच दिन तक यह प्रयोग सम्पन्न करना चाहिए।

२- यह प्रयोग घर के किसी अलग कमरे में करे, पर इस बात का ध्यान रखे कि जब तक प्रयोग सम्पन्न हो तब तक उस कमरे में अन्य कोई न जाए, अथवा यह प्रयोग एकांत स्थान में नदी के किनारे अथवा शून्य स्थान पर करे, जहां पर लोगों का आना जाना नहीं के बराबर हो।

३- प्रयोग प्रारम्भ करने के एक दिन पहले घर में किसी कुवारी कन्या जिसकी आयु ग्यारह वर्ष से बड़ी न हो, और जो अभी रजस्वला न हुई हो, उसे घर में बुला कर उसका संक्षिप्त पूजन करे, उसे भोजन, करावे और यथोचित वस्त्र आदि भेट स्वरूप दें।

४– यह प्रयोग या तो ब्रह्म मुहूर्त में अर्थात सुबह चार बजे के आस पास से प्रारम्भ करे या रात्रि में यह प्रयोग सम्पन्न करे, जिस समय सर्वथा एकांत हो, और लोगों का शोरगुल न हो।

५– यह प्रयोग सम्पन्न करने के बाद किसी ब्राह्मण को घर में बुला कर घी और गुड़ से बने हुए पुवे आदि का भोजन करावें अथवा मन्दिर में घी और गुड़ चढ़ा दें फिर भी इस विश्व सार तंत्र में बताया हैं, कि घर में ब्राह्मण को बुलाकर भोजन कराना ज्यादा श्रेष्ठ है।

६- यदि यह प्रयोग लगातार तीन दिन कर दें, तो वह सभी शास्त्रों का ज्ञाता और भगवती पदमावती के पुत्र के समान होता है।

७- यदि इस प्रयोग को पूरे पांच दिन सम्पन्न किया जाय और अपने सामने गुरूदेव का चित्र स्थापित कर उन्हें साक्षात् शिव और उनकी पत्नी को साक्षात् पार्वती मान कर अभेद भाव से इस मन्त्र का जप पांच दिन तक करे तो वह समस्त प्रकार की सम्पत्ति निश्चय ही प्राप्त करता है।

मेरे कहने का तात्पर्य यह है, कि विश्व सार तंत्र के अनुसार साधक पदमावती सिद्धि दिवस को एक दिन तो प्रयोग करे ही, पर वह चाहे तो पदमावती दिवस से आगे तीन दिन या पांच दिन तक भी प्रयोग कर सकता है।

इस प्रकार का प्रयोग चलते समय, यदि साधक दिन को या रात्रि को कोई दूसरा प्रयोग भी हाथ में लिया हुआ हो तो उसे भी सम्पन्न कर सकता है, इसमें कोई बाधा नही है।

८- इस प्रयोग को सम्पन्न करने पर धन धान्य की वृद्धि तो निरन्तर होती ही है, आर्थिक रूप से वह अत्यन्त समृद्ध तेजस्वी और सौभाग्यशाली भी बन जाता है, ऐसे साधक के समस्त पाप कट जाते है, उसका दुर्भाग्य समाप्त हो जाता है।

९- यदि पुष्य नक्षत्र में इस मंत्र को गोरोचन से लिख कर कांच में मंढ़वा कर दुकान में या घर में रख दें तो निरन्तर उन्नति होती रहती है।

१०- यदि एक कागज पर पुष्य नक्षत्र के दिन यह मंत्र लिख कर उसे गेहूं के आटे में मसल कर उसकी छोटी छोटी गोलियां बना कर मछलियों को वे गोलियां खिला दी जाय तो वशीकरण सिद्ध हो जाता है, उसके चेहरे पर एक विशेष प्रकार की सम्मोहन शक्ति आ जाती है, और वह सर्वत्र विजयी होता है।

११- यदि मंगलवार के दिन किसी कागज पर इस मन्त्र को लिख कर उसके नीचे शत्रु का नाम लिख कर जमीन में गाड़ दें या श्मशान में जा कर उस कागज को जला दें तो शत्रु का मारण निश्चित रूप हो जाता है।

१२- यदि पुष्य नक्षत्र के दिन भोज पत्र पर गोरोचन से मन्त्र को लिख कर उसे मसल कर उसे दूध बने से हुए पेडे या प्रसाद में मिला कर जिसको भी वह प्रसाद खिला दिया जाता है, वह निश्चित रूप में वश में हो जाता हैं और जीवन भर गुलाम की तरह कार्य करता है।

१३- यदि रविवार के दिन पुष्य नक्षत्र हो, और गोरोचन से इस मंत्र को कागज पर लिख कर कार्यालय में अथवा फैक्टरी में वह मंढ़वा कर लटका दिया जाय तो कर्मचारियों की समस्या समाप्त हो जाती है, उस फैक्टरी में हड़ताल नहीं होती और किसी प्रकार की बाधा या अड़चन उपस्थित नहीं होती।

१४- यदि इस मन्त्र को पुष्य नक्षत्र के दिन भोज पत्र पर लिख कर अपने घर के भण्डार गृह में रखे, तो उसके घर में निरन्तर उन्नति होती रहती है।

पर इन सब के लिए आवश्यक है, कि साधक पहले इस पदमावती साधना को सिद्ध करे, तभी उसे उपरोक्त लाभ प्रतीत होते है।

पदमावती प्रयोग

इस साधना को पुरुष या स्त्री कोई भी सम्पन्न कर सकता है, पर रजस्वला स्त्री को उन दिनों में यह प्रयोग सम्पन्न नहीं करना चाहिए, इसी प्रकार पुरुष को साधना काल में भूमि शयन करना चाहिए ब्रह्मचर्य का पूरा पालन करना चाहिए।

पदमावती महायंत्र

विश्व सार तंत्र के अनुसार इस साधना का प्रमुख भाग पद्मावती महायंत्र है, जो कि धातु निर्मित हो और विश्व सार तंत्र के अनुसार ही मंत्र सिद्ध और प्राण प्रतिष्ठा युक्त हो।

विश्व सार तंत्र में इस महायंत्र को सिद्ध करने की गोपनीय विधि स्पष्ट की हैं, जो कि अत्यन्त जटिल, कठिन और श्रम साध्य है, उसमें बताया गया है, कि इस महायन्त्र को 'वाग्भव" बीज से सम्पुटित कर "लज्जा" बीज से युक्त कर ' रमा" बीज से कीलक कर "काम" बीज से सिद्ध करना चाहिए, तभी यह यंत्र सिद्ध होता है, और ऐसा ही महायत्र साधक के लिए उपयोगी होता है।

साधक को चाहिए कि वह इस प्रकार का अद्वितीय महायन्त्र सम्पन्न कर ले, या किसी योग्य पंडित से तैयार करवा ले अथवा समय रहते पत्रिका कार्यालय से सम्पर्क स्थापित कर इस प्रकार का महायंत्र प्राप्त कर ले, क्योंकि इस प्रकार के महायंत्र को सिद्ध करना कठिन है, और ऐसे बहुत ही कम महायंत्र सिद्ध हो सकते है।

साधना प्रयोग

जब साधक विश्व सार तंत्र के अनुसार तांत्रोक्त पदमावती साधना सम्पन्न करना चाहें तो वह या तो प्रातः काल ब्रह्म मुहूर्त में अर्थात चार बजे के आस पास साधना प्रारम्भ करे या रात्रि को ९ बजे के बाद इस साधना को म्पन्न करे।

साधक स्नान कर अपने पूजा स्थान में सफेद ऊनी आसन बिछा कर पूर्व की ओर मुंह कर बैठ जाय और सामने पूज्य गुरूदेव का सुन्दर चित्र स्थापित कर दें, यदि वह गुरूमाता और गुरूदेव दोनों का चित्र प्राप्त कर साधना स्थल पर स्थापित करे तो ज्यादा महत्वपूर्ण माना गया है, इन दोनों को भगवान शिव और साक्षात् पार्वती समझ कर मन ही मन बिना किसी संशय के अभेद भाव से उन्हें शिव पार्वती मान कर उनकी पूर्ण पूजा करें, पूजा में चित्र को स्नान करावे, फिर उसे पौंछ कर केसर का तिलक करे, सामने अगरबत्ती लगावे, घी का दीपक प्रज्वलित करें, और सुन्दर पुष्पों का हार चित्र को पहनावे इसके बाद गुरू मंत्र की एक माला मन्त्र जप करे, और गुरू आरती पूर्ण भक्ति भाव से सम्पन्न करें. यह इस प्रयोग में आवश्यक है।

इसके बाद एक थाली में केसर से स्वस्तिक का चिन्ह बना कर उसमें इस दुर्लभ 'पदमावती महायंत्र' को स्थापित करें, और उसे दूध, दही, घी, शहद, और शक्कर से स्नान कराने के बाद पंचामृत से स्नान करावे, और फिर शुद्ध जल से धो कर पौंछ कर किसी दूसरी थाली में केसर का स्वस्तिक बना कर उसमें इस यंत्र को स्थापित करें।

तत्पश्चात् यंत्र की संक्षिप्त पूजा करें, केसर का तिलक लगावे अक्षत अबीर गुलाल तथा पुष्प समर्पित करे, सामने दूध का बना हुआ नैवेद्य चढ़ावे और शुद्ध घृत का दीपक प्रज्वलित करें।

इसके बाद इस पद्मावती महायंत्र के ऊपर 'वाग्भव यंत्र' को स्थापित करे, यंत्र के बाईं ओर 'लज्जा यंत्र' स्थापित करे, यन्त्र के दाहिनी ओर 'लक्ष्मी यन्त्र' स्थापित करे और यंत्र के नीचे की ओर 'काम यंत्र' स्थापित करें। इस प्रकार इस यन्त्र के चारों तरफ ये चार यंत्र स्थापित करने आवश्यक माने गये है, इनमें चारों ही यंत्र अपने आपमें अत्यन्त दुर्लभ और मन्त्र सिद्ध होने चाहिए. साथ ही साथ ये प्राण प्रतिष्ठा युक्त होने चाहिये जिससे साधक को तुरन्त अनुकूलता प्राप्त हो सके।

विनियोग

इसके बाद हाथ में जल ले कर संकल्प करें कि मैं अमुक गौत्र, अमुक पिता का, अमुक नाम का साधक पूर्ण पद्मावती साधना को सिद्ध करना चाहता हूं और ऐसा कहते हुए जल किसी पात्र में छोड़ दें।

इसके बाद पुनः हाथ जल ले कर विनियोग करें–

ॐ अस्याश्चतुरक्षरी-विष्णु-वल्लभायाः मंत्रस्य श्री भगवान् शिव ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः, वाग्भवी शक्तिः देवता, वाग्भवं (ऐं) बीजं, लज्जा (ह्रीं) शक्तिः, रमा (श्रीं) कीलक, काम-बीजात्मकं (क्लीं) कवच, मम सु-पाण्डित्य-कवित्व-सर्व-सिद्धि-समृद्धये मंत्र जपे विनियोग।

विनियोग के बाद कमल गट्टे की माला से निम्न मंत्र की २१ माला मंत्र जाप करें, इसमें कमल गट्टे की माला का ही प्रयोग होता है, जो कि मंत्र सिद्ध होनी चाहिए।

पद्मावती मूल मंत्र

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं ॐ

जब मंत्र जप पूरा हो जाय तब साधक विश्राम करे, यदि साधक चाहे तो इसके बाद पद्मावती स्तोत्र का पाठ कर सकता हैं, **यद्यपि इस साधना में यह अनिवार्य नहीं है, फिर भी इस स्तोत्र की भी तांत्रिक क्षेत्र में अत्यन्त महत्ता है।**

मैं केवल साधकों की जानकारी के लिए ही इस स्तोत्र को आगे की पंक्तियों में दे रहा हूं, यद्यपि मंत्र जाप सम्पन्न करने पर उस दिन की साधना पूर्ण मानी जाती है।

पद्मावती स्तोत्र

ऐंकारी मस्तके पातु वाग्भवी सर्व-सिद्धिदा।
ह्रीं पातु चक्षुषोर्मध्ये चक्षु-युग्मे च शांकरी ॥१॥

जिह्वायां मुख - वृत्ते च कर्णयोर्दन्तयोर्मपि।
ओष्ठाधरो दन्त-पंक्ती तालु-मूले हनु पुनः ॥२॥

पातु मां विष्णु-वनिता लक्ष्मीः श्री विष्णु-रूपिणी ।
कर्ण-युग्मे भुज द्वन्द्वे स्तन द्वन्द्वे च पार्वती ।।३।।

हृदये मणि-बन्धे च ग्रीवायां पार्श्वयोर्द्वयोः ।
पृष्ठ-देशे तथा गुह्ये वामे च दक्षिणे तथा ।।४।।

उपस्थे च नितम्बे च नाभौ जंघा-द्वये पुनः ।
जानु - चक्रे पद - द्वन्द्वे घटिके गुलि - मूलके ।।५।।

स्वधा तु प्राण शक्त्या वा सीमन्ते मस्तके तथा ।
सर्वांगे पातु कामेशी महादेवी समुन्नतिः ।।६।।

पुष्टिः पातु महा माया उत्कृष्टिः सर्वदा वतु ।
ऋषिः पातु सदा देवी सर्वत्र-शम्भु-वल्लभा ।।७।।

वाग्भवी सर्वदा पातु, पातु मां हर-गेहिनी ।
रमा पातु महा-देवी, पातु माया स्वराट् स्वयं ।।८।।

सर्वांगे पातु मां लक्ष्मी विष्णु-माया सुरेश्वरी ।
विजया पातु भवने जया पातु सदा मम ।।९।।

शिव-दूती सदा पातु सुन्दरी पातु सर्वदा ।
भैरवी पातु सर्वत्र भेरुण्डा सर्वदा वतु ।।१०।।

त्वरिता पातु मां नित्यमुग्र-तारा सदा वतु ।
पातु मां कालिका नित्यं काल-रात्रिः सदा वतु ।।११।।

नव-दुर्गाः सदा पान्तु कामाख्या सर्वदा वतु ।
योगिन्यः सर्वदा पान्तु मुद्राः पान्तु सदा मम ।।१२।।

मातरः पान्तु देव्यश्च चक्रस्था योगिनी-गणा ।
सर्वत्र सर्व - कार्येषु सर्व - कर्मसु सर्वदा ।।१३।।

पातु मां देव-देवी च लक्ष्मीः सर्व समृद्धि दा ।
इति ते कथितं दिव्यं कवचं सर्व-सिद्धये ।।१४।। ★

तन्त्र साधना की पीठ पद्धति

बगलामुखी सिद्धि

३१–१२–८६

बगलामुखी का शुभ नाम " बल्गा मुखी " है, जिस प्रकार से हम घोड़े के मुंह पर लगाम लगा कर उसे नियन्त्रण में रखते हैं उसी प्रकार से बल्गामुखी के द्वारा समस्त शत्रुओं के मुंह पर लगाम लगाते हुए उन्हें अपने नियन्त्रण में रख पाते हैं।

तांत्रोक्त साधना में बगलामुखी की कई विधियां प्रचलित हैं, पर बगला-मुखी के सिद्धतम आचार्य मत्स्येन्द्र नाथ थे, जिन्होंने पीठ पद्धति से बगलामुखी सिद्ध कर यह बता दिया था, कि इसके माध्यम से असम्भव कार्यों को भी संभव किया जा सकता है।

आगे की पंक्तियों में, जगत् गुरु मत्स्येन्द्र नाथ द्वारा प्रणीत बगलामुखी साधना की पीठ पद्धति स्पष्ट कर रहा हूं, जो कि पूरे संसार में पहली बार प्रकाशित हो रही है।

यह महत्वपूर्ण नहीं है, कि बगलामुखी साधना सिद्ध की जाय, महत्वपूर्ण तो यह है कि उसे किस उपाय या किस विधि से सिद्ध की जाती है, 'तोड़ल तंत्र' में बताया है, कि दस महाविद्याओं में बगला मुखी सर्वश्रेष्ठ महाविद्या है, जो कि साधक को समस्त प्रकार से पूर्णता देने में सहायक है।

"प्रपंच सार तंत्र" में बगला मुखी साधना के बारे में बताया है, कि यह साधना तांत्रोक्त पद्धति से ही सिद्ध की जानी चाहिए, जिससे कि इसके माध्यम से साधक को पूर्ण सफलता और सिद्धि प्राप्त हो सके।

'रूद्रयामल तंत्र' में स्पष्ट रूप से बताया है कि बगला मुखी साधना की पीठ पद्धति अपने आपमें सर्वाधिक महत्वपूर्ण और दुर्लभ है जिसे महायोगी राज जगद्गुरू मत्स्येन्द्र नाथ ने योग विद्या से स्वयं भगवती बगला मुखी को अपने सामने प्रत्यक्ष कर उसकी गोपनीय विधि और रहस्य प्राप्त किया था।

कहते है, कि मत्स्येन्द्र नाथ को पीठ पद्धति के द्वारा जब बगला मुखी सिद्ध हुई तो वह नित्य मत्स्येन्द्र नाथ के सामने आकर उपस्थित होती और मत्स्येन्द्रनाथ स्वयं उसे अपने हाथों से भोजन कराते।

जगद्गुरू मत्स्येन्द्रनाथ ने ताड पत्रों पर बल्गा सिद्ध साधना पद्धति पर एक ग्रन्थ लिखा है, जो आज भी तांत्रिक क्षेत्र में अद्वितीय ग्रन्थ माना जाता है, इस महा-विद्या को सिद्ध करने के लिए इससे ज्यादा महत्वपूर्ण और कोई ग्रन्थ नहीं है। यह ग्रन्थ पूर्णतः गोपनीय और दुर्लभ रहा, तिब्बत के मठों मे जरूर इसकी प्रतिलिपि प्राप्त हैं, और जब राहुल सांकृत्यायन तिब्बत गये और उन्होंने तिब्बत के मठों में भारतीय तांत्रिक ग्रन्थों की खोज की तो उन्हें स्वामी मत्स्येन्द्र नाथ लिखित उपरोक्त ग्रन्थ की प्रतिलिपि देखने को मिली, वे चाहते थे, कि इस दुर्लभ ग्रन्थ की प्रतिलिपि भारतवर्ष पहुँच जाय परन्तु वे अपने प्रयास में असफल ही रहे।

तिब्बत के कई लामा इसी पीठ पद्धति से बगला मुखी को सिद्ध कर अद्वितीय आचार्य और सिद्ध योगी बने है। सपर्या तंत्र में बौद्ध लामा ने पीठ पद्धति के द्वारा मत्स्येन्द्रनाथ बगला मुखी साधना के निम्न आठ लाभ या प्रयोग बताये है जो कि अपने आप में अद्वितीय है। आज भी ये लामा इसी पद्धति से साधना सिद्ध कर इन सिद्धियों को प्राप्त करते है।

बगला मुखी साधना के लाभ

सपर्या तंत्र में लिखित बौद्ध याचमी के अनुसार गुरू मत्स्येन्द्र नाथ प्रणीत बगला मुखी साधना सिद्ध करने पर निम्न लाभ स्पष्ट प्राप्त होते है, और इन लाभों का प्रयोग या उपयोग साधक कभी भी सम्पन्न कर सकता है।

१- इस प्रकार की साधना सिद्ध करने पर साधक निश्चय ही अपने शरीर को वायु से भी शून्य कर आकाश में विचरण कर सकता हैं और एक स्थान से दूसरे स्थान तक जा सकता है।

२- इस साधना के द्वारा साधक दुर्गम्य बर्फीले पहाड़ों पर नंगे पांव एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाने पर उसे किसी प्रकार की कठिनाई या बाधा उपस्थित नहीं होती और वह निश्चिन्त निर्भीक हो कर पूरे संसार में कहीं पर भी विचरण करने में समर्थ होता है।

३- इस साधना को सिद्ध करने पर साधक मृत्यु पर पूर्णतः नियंत्रण प्राप्त कर लेता है, एक प्रकार से ऐसे व्यक्ति को 'इच्छा मृत्यु सिद्धि' पुरूष कहा जाता है, महा-भारत कालीन भीष्म पितामह ने यही साधना सिद्ध की थी, ऐसा कुछ ग्रन्थों में आलेख है।

४- इस साधना से साधक जीवन के किसी भी प्रकार के तत्वों पर पूर्णतः अधिकार रखता है, वह अकेला ही हजारों शत्रुओं पर भारी पड़ता है, उसका शरीर वज्र की तरह मजबूत और सुदृढ़ हो जाता है, फलस्वरूप उस पर किसी भी प्रकार का शस्त्र प्रहार नहीं हो सकता, यही नहीं अपितु शत्रु न तो उस पर हावी हो सकते है, न उसको पीड़ा पहुंचा सकते है, और न उसके लिए परे-शानी पैदा कर सकते है।

५- ऐसे साधक के चारों ओर सुदर्शन चक्र की तरह "बल्गा चक्र" घूमता रहता है, जो प्रत्येक प्रकार की आपत्ति और बाधाओं से उसे बचाता है, एक प्रकार से ऐसा चक्र चौबीसों घण्टे उसकी रक्षा करता रहता है,

वास्तव में ही ऐसा साधक इस संसार में अजेय माना जाता है।

६– ऐसे साधक को राज्य बाधा व्याप्त नहीं होती, आज के युग के संदर्भ में देखा जाय तो ऐसे साधक पर पुलिस, इन्कम टेक्स, या अन्य किसी भी प्रकार की राज्य बाधा नहीं आती, वह स्वतंत्र रूप से अपने व्यापार को सम्पन्न कर सकता हैं, जीवन में निरन्तर उन्नति कर सकता है, और आगे सफलताओं को प्राप्त करता हुआ इच्छा मृत्यु वरण कर सकता हैं।

उपरोक्त छः लाभों के अलावा भी ऐसा साधक समाज में पूजनीय और सम्माननीय होता है। ऐसे साधक के चेहरे पर एक विशेष प्रकार का ओज दिखाई देता है, जिसकी चका चौंध से उससे मिलने वाला व्यक्ति निस्तेज हो जाता है, ऐसे व्यक्ति के शरीर में कामदेव का निवास होता है, फलस्वरूप उसका व्यक्तित्व चुम्बकीय और आकर्षण युक्त बन जाता है, वह किसी को भी सम्मोहित करने की क्षमता रखता है, ऐसे साधक के जीवन में किसी प्रकार की कोई बाधा उपस्थित नहीं होती और वह सिद्ध योगी की श्रेणी में आता है। इस प्रकार की साधना सिद्ध करने पर साधक को जगदगुरू मत्स्येन्द्रनाथ के साक्षात् दर्शन होते है और साधना सिद्ध करने के बाद गुरू मत्स्येन्द्र नाथ स्वयं उसे "वल्गा दीक्षा" प्रदान करते है।

वास्तव में हो बगला मुखी साधना जीवन की अद्वितीय और आश्चर्यजनक साधना है, हकीकत में देखा जाय तो भारतीय साधक अभी तक इसके महत्व और मूल्य को समझ नहीं सके है पर जिस दिन इस साधना की पीठ पद्धति समझ लेगे उस दिन पूरे भारतवर्ष में क्रांति सी आ जायेगी और साधक अपने जीवन म जो भी और जिस प्रकार से भी चाहेगा, उस प्रकार से कार्य सम्पन्न कर सकेगा।

सिद्धाश्रम ने पौष शुक्ल ३ को "बगला मुखी सिद्धि दिवस" माना है, अंग्रेजी तारीख के अनुसार इस वर्ष ३१-१२-८९ को आता है, अतः भारत के प्रत्येक साधक को चाहिए कि वे इस साधना को इस महत्वपूर्ण दिवस पर अवश्य ही सम्पन्न करें।

यों तो तांत्रिक ग्रन्थों के अनुसार किसी भी रविवार या मंगलवार से इस साधना को प्रारम्भ किया जा सकता है, परन्तु जिन साधकों के पास समय हो, वे बगला मुखी सिद्धि दिवस के दिन इस साधना को सम्पन्न करें। यह साधना पुरूष या स्त्री कोई भी सम्पन्न कर सकता है। यह साधना दिन या रात्रि को कभी भी सम्पन्न की जा सकती है।

साधना प्रयोग

जिस दिन यह साधना प्रारम्भ करनी है, साधक उससे एक दिन पहले किसी पेड़ को हरी डाली लाकर अपने पूजा स्थान में स्थापित करदे, और उसके पास ही लकड़ी का बाजोट बिछा कर उस पर तांबे का कलश स्थापित कर दें। इस कलश में पीपल या वड़ के पांच पत्ते रख कर, उसके ऊपर नारियल रखें, और फिर कलश को समुद्र का प्रतिनिधि मान कर उससे प्रार्थना करें कि मैं कल बगला मुखी साधना सिद्ध करना चाहता हूं, आप मेरे लिए सहायक हो इसी प्रकार किसी पात्र में मिट्टी का ढ़ेर बना कर उसमें हरे पेड़ की छोटी डाली लगा दें, उसकी संक्षिप्त पूजा करे और कहे कि मैं इस अवसर पर समस्त संसार की बनस्पति को आमन्त्रित करता हूं, कि वे मेरे जीवन को हरा भरा रखते हुए, मुझे अपने जीवन में पूर्णतः सफलता प्रदान करें।

इसके बाद जिस दिन साधना सम्पन्न करनी हो, उस दिन प्रातः काल साधक ब्रह्म मुहूर्त में ही उठ जाय, और सूर्योदय से पहले ही स्नान करके पूर्व दिशा की ओर मुंह कर संध्या प्राणायाम करें और गायत्री मन्त्र की एक माला मन्त्र जप करें, इसके बाद हाथ में जल पात्र ले कर सूर्य उगने पर भगवान सूर्य को अर्घ्य दें, और फिर जहां अर्घ्य का जल गिरा है, उसकी सात प्रदक्षिणा करे, और भगवान से प्रार्थना करें, वे उसे तेज, बल, साहस और

शक्ति प्रदान करें, जिससे कि वह साधना में पूर्ण सफलता प्राप्त करें।

इसके बाद साधक पीली धोती पहिन कर पीले आसन पर पूर्व या उत्तर की ओर मुंह कर बैठ जाय, इस साधना में पीले पुष्पों का ही प्रयोग होता है, साधना से दो दिन पहले ही रूई को पीले रंग में रंग कर उसे सुखा दें, और फिर उसकी बत्ती बना कर घृत का दीपक लगावे, यह सूर्योदय से दूसरे दिन सूर्योदय तक अर्थात चौबीस घण्टे अखण्ड दीपक जलता रहना चाहिए।

इसके बाद कांसी की थाली ले कर उसमें चांदी की शलाका से अष्ट गन्ध के द्वारा एक स्त्री का चित्र बनावे, जो कि खड़ी हुई हो, और जिसका एक पैर मनुष्य की छाती पर हो, और उनके हाथों में तलवार हों, चाहे चित्र अच्छा बने या गलत, इस बात की चिन्ता न करें, साधक चाहें तो पत्रिका कार्यालय से भगवती बगला मुखी देवी का चित्र प्राप्त कर सकता है, और उस चित्र को देख कर अष्ट गन्ध के द्वारा थाली में चांदी की शलाका से भगवती बगला मुखी का चित्र अंकन करें।

इसके बाद सामने लकड़ी के बाजोट पर इस थाली को स्थापित कर दें, और थाली के पीछे अपने गुरू का चित्र स्थापित करें, यदि गुरू स्वयं उपस्थित हो तो उनको सम्मान पूर्वक अपने पास बिठाये, यदि ऐसा न हो तो गुरू के चित्र को स्थापित करें, और उन्हें पूर्ण योगीराज मान कर उनकी विधि विधान के साथ पूजा करें, और गुरू आरती सम्पन्न करें।

पीठ पद्धति सिद्ध बगला मुखी यन्त्र

इसके बाद मत्स्येन्द्र नाथ प्रणीत पीठ पद्धति से युक्त भगवती बगलामुखी का ताम्र पत्र पर अंकित मन्त्र सिद्ध प्राण प्रतिष्ठा युक्त महा यन्त्र उस थाली में स्थापित करें, यह यन्त्र आप पहले से तैयार करवा कर सिद्ध करवा सकते हैं, या पत्रिका कार्यालय से प्राप्त कर सकते हैं।

फिर "ॐ बगलामुखी देव्यै नमः" शब्द का उच्चारण करते हुए इस यन्त्र के ऊपर तीन 'गौरी शंकर रुद्राक्ष' स्थापित करें, बांये हाथ की ओर दो लघु 'नारियल' तथा दाहिने हाथ की ओर दो तांत्रिक नारियल स्थापित करें, यन्त्र के नीचे के भाग में तीन "त्रिरूप रुद्राक्ष" स्थापित करें।

इसके बाद एक अलग लकड़ी के बाजोट पर पीला कपड़ा बिछा कर उस पर सुपारी रख कर उसे महायोगी मत्स्येन्द्रनाथ मान कर उसकी संक्षिप्त पूजा करें, और उनका आह्वान कर निवेदन करें कि वे आ कर साधना में सिद्धि प्रदान करें।

इसके बाद साधक हाथ में जल ले कर संकल्प करें कि मैं अमुक गोत्र, अमुक पिता का पुत्र, अमुक नाम का साधक गुरू आज्ञा से भगवान सूर्य या दीपक की साक्षी में मत्स्येन्द्र नाथ प्रणीत पीठ पद्धति से बगला मुखी साधना सिद्ध कर रहा हूं – ऐसा कह कर हाथ में लिया हुआ जल किसी पात्र में छोड़ दें।

विनियोग

इसके बाद दाहिने हाथ में जल ले कर निम्न विनियोग का उच्चारण करते हुए जल पात्र में छोड़े –

ॐ अस्य श्री बगलामुखी - मन्त्रस्य नारद-ऋषिः। त्रिष्टुप छन्दः। बगलामुखी देवता। ह्लीं बीजं। स्वाहा शक्तिः। मम शरीरे (यजमानस्य शरीरे वा) नाना-ग्रहोपग्रह-प्रयोग-ग्रह-प्रवेश-ग्रह-प्रयोग - सम्पूर्ण-रोग - समूह-वात्तिक-पैत्तिक-श्लैष्मिक-द्वन्द्वाजादि-नाना–दुष्टरोग-जन्मज–पातकजादि-शान्त्यर्थे सर्व-दुष्ट बाधा-कष्ट-कारक-ग्रहस्य उच्चाटनार्थे शीघ्रारोग्य-लाभार्थे एवं मम अन्य-अभीष्ट-कार्य-सिध्यर्थे जपे विनियोगः।

इसके बाद साधक ऋष्यादि न्यास करें, इसमें जहां जहां पर शरीर के अंगों का वर्णन है, वहां वहां दाहिने हाथ से स्पर्श करते हुए उच्चारण करें –

ऋष्यादि न्यास

नारद–ऋषये नमः शिरसि
त्रिष्टुप्छन्दसे नमः मुखे।
बगलामुखो-देवतायै नमः हृदि।
ह्लीं बीजाय नमः गुह्ये।
स्वाहा शक्तयै नमः पादयोः।

इसके बाद साधक निम्न प्रकार से न्यास करे, न्यास का तात्पर्य है कि शरीर के जिन अंगों का वर्णन विवरण है, उसे देखते हुए या स्पर्श करते हुए सम्बन्धित मन्त्र का उच्चारण करें।

न्यास

अंग न्यास	कर न्यास	हृदयादि न्यास
ॐ ह्लीं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
बगलामुखी	तर्जनीभ्यां नमः	शिरसे स्वाहा
सर्व-दुष्टानां	मध्यमाभ्यां नमः	शिखायै वषट
वाचं मुखं स्तम्भय	अनामिकाभ्यां नमः	कवचाय हुं
जिह्वां कीलय कीलय	कनिष्ठिकाभ्यां नमः	नेत्र-त्रयायवौषट
बुद्धि नाशय ह्लीं ॐ स्वाहा	करतल-करपृष्ठाभ्यां नमः	अस्त्राय फट्

इसके बाद दोनों हाथों में पीले पुष्प और पीले अक्षत ले कर यन्त्र पर चढ़ाते हुए निम्म प्रकार से ध्यान करें।

ध्यान

मध्ये सुधाब्धि-मणि-मण्डप-रत्न वेद्यां,
सिंहासनोपरि-गतां परिपोत-वर्णाम्।
पीताम्बराभरण - माल्य - विभूषितांगीं,
देवीं स्मरामि धृत-मुद्गर-वैरि-जिह्वाम् ॥
जिह्वाग्रमादाय करेण देवीं वामेन शत्रुन् परिपीडयन्तिम्।
गदाभिघातेन च दक्षिणेन पीताम्बराढ्यां द्विभुजां नमामि ॥

ऐसा करने के बाद साधक "मत्स्येन्द्र नाथ प्रणीत सिद्ध मूंगे की माला" से निम्न मन्त्र की २१ माला मन्त्र जप करें।

मत्स्येन्द्रनाथ सिद्ध मन्त्र

ॐ ह्लीं बगलामुखी सर्व दुष्टानां वाचं मुखं अमुक-साधक आवाहित सिद्ध सिद्धि देहि देहि आकर्षण सम्मोहन प्रदय प्रदय ह्लीं ॐ स्वाहा।

इसके बाद साधक किसी पात्र में या हवन कुण्ड में एक हजार आहुतियां दें, इसमें चन्दन, पीपल, बड़ या पलास की लकड़ी का ही प्रयोग किया जाना चाहिए।

हवन सामग्री में घी, शहद, चीनी, दूध, (दूर्वा) कच्चा धान, कुम्हार के चाक की मिट्टी तथा पीले सरसो का तेल मिला कर इसके द्वारा ही उपरोक्त मन्त्र से हवन करें।

हवन के बाद उसी दिन या दूसरे दिन पांच कुंवारी कन्याएं तथा एक बटुक (जिसकी उम्र ८ वर्ष से ज्यादा न हो और कन्याओं की उम्र १२ वर्ष से ज्यादा न हो) का पूजन कर उन्हें भोजन करावें, भोजन में चने के दाने से बनी हुई मिठाई अवश्य होनी चाहिए, भोजन के बाद इन सभी को यथा शक्ति वस्त्र, दक्षिणा आदि देते हुए उनके पैर छू कर उन्हें प्रणाम करें।

यह एक दिन का प्रयोग है, जो किसी भी मंगलवार या रविवार अथवा बगलामुखी सिद्धि दिवस के अवसर पर सम्पन्न हो सकता है।

वास्तव में ही यह प्रयोग अपने आप में अद्वितीय है, और साधक को इसका अवश्य ही लाभ उठाना चाहिए, साधना के बाद थाली में रखी हुई जो सामग्री तथा तांत्रिक नारियल आदि हैं, उसे नदी या तालाब में विसर्जित कर दें तथा मूंगे की माला को धारण कर ले, ऐसा करने पर यह साधना सिद्ध होती है।

मोक्षदा प्रयोग

६-११-८६

मोक्षदा प्रयोग कई उपनिषदों में प्राप्त होता है। जीवन के समस्त रोग, समस्त प्रकार की व्याधियां परेशानियां कष्ट अभाव और चिन्ताओं से मोक्ष प्राप्त करने के लिए यह प्रयोग सम्पन्न किया जाता है।

ज्योतिष शास्त्र के अनुसार इस वर्ष ९-११-८९ को मोक्षदा एकादशी है, अतः यह प्रयोग इसी दिन संपन्न होता है।

साधक इस दिन प्रातःकाल उठ कर स्नान करें, और फिर आसन पर बैठकर "मोक्षदा माला" से निम्न मंत्र की ११ माला मंत्र जप करें, इसके लिए शास्त्रों में तीन समय निर्धारित किये है।

यह प्रयोग इसी दिन या तो सूर्योदय से पहले सम्पन्न होना चाहिए, अथवा दोपहर को १२ बजे से डेढ़ बजे के बीच पूर्ण होना चाहिए अथवा मध्य रात्रि को अर्थात् रात्रि को १२ बजे से १ बजे के बीच पूर्ण किया जाना चाहिए।

मोक्षदा माला विशेष मनकों से गुंथी हुई दुर्लभ माला होती है, जिसकी प्रशंसा देवताओं ने ऋषियों ने गन्धर्वों ने भी की है। इसी माला से ११ माला मंत्र जप होना चाहिए।

मंत्र

।। ॐ भूत वर्तमान समस्त पाप रोग निवृत्तय निवृत्तय फट् ।।

मंत्र जप करते समय, अन्य किसी प्रकार के विधि विधान की जरूरत नहीं है, इसी माला से यह मंत्र जप सम्पन्न होना चाहिए, इस साधना को पुरुष या स्त्री कोई भी सम्पन्न कर सकता है।

इस प्रयोग से किसी भी प्रकार की बाधा दूसरे ही दिन समाप्त होनी प्रारम्भ हो जाती है, और असाध्य तथा किसी भी प्रकार की समस्या का तुरन्त समाधान हो जाता है, यह अपने आपमें अनुभूत प्रयोग है, इसे पुरुष या स्त्री कोई भी सम्पन्न कर सकता है।

क्रिया सम्पन्न होने पर दूसरे दिन या उसी दिन इस माला को नदी, तालाब या कुंए में अथवा किसी पवित्र स्थान या मन्दिर में रख देनी चाहिए इससे निश्चय ही जन्म जन्म के पाप और वर्तमान जीवन की बाधाएं समाप्त होती है, और व्यक्ति को नया हौसला और हिम्मत आ जाती है।

नोट करे– गुरूदेव के घर के टेलीफोन नंबर बदल गये है--३२२०६

रजि० नं० ३५३०५/८१

पोस्टल एल०आर० जे० ३६६७/८६-८७

जीवन की अमूल्य निधि

पांच नई कैसेट

(पूज्य गुरूदेव के मधुर शब्दों से गुंथित)

- **प्रेम न हाट बिकाय**

मानव मूल्य तथा साधना की गहराइयों से ओत प्रोत एक दुर्लभ केसेट। सिद्धियों की प्राप्ति का अनमोल खजाना।

- **सच्चिदानन्द**

एक दुर्लभ केसेट। विश्व विख्यात योगीराज स्वामी सच्चिदानन्द जी के जीवन के बेजोड़ रहस्य। पूज्य गुरूदेव की अमृत वाणी में।

- **मैं तो गुरूदेव रंग राती**

समर्पण, श्रद्धा, विश्वास और प्रेम के ताने-बाने से बुनी एक बेजोड़ केसेट। अद्वितीय प्रवचन, दुर्लभ कथ्य।

- **ॐ मणि पद्मे हुं**

तिब्बती लामाओं की दुर्लभ गोपनीय साधनाओं का अद्वितीय रहस्य। एक बेजोड़ केसेट।

- **मृत्योर्मा अमृतं गमय**

कठोपनिषद पर आधारित एक श्रेष्ठ केसेट। मृत्यु पर अमरत्व की श्रेष्ठ प्रक्रिया एक शानदार उपनिषद-केसेट

प्रत्येक केसेट का मूल्य ६५) रू. मात्र

गारण्टी

यदि आपको कोई केसेट पसन्द न आवे, तो सुरक्षित रूप से लौटा दें, हम आपको पूरी धनराशि वापिस लौटाने की गारण्टी देते हैं।

धनराशि मनिआर्डर या बैंक ड्राफ्ट से

सम्पर्क- मंत्र तंत्र यंत्र विज्ञान, डॉ० श्रीमाली मार्ग, हाई कोर्ट कोलोनी जोधपुर (राज.)